गिनती

1 [1] मिस्र देश से इस्राएलियों के बाहर निकल आने के दूसरे
साल के दूसरे महीने के पहले दिन, याहवे ने सीनै जंगल
में 'मिलने के तम्बू' में मूसा से कहा, [2] इस्राएलियों के सभी
कबीलों (गोत्रों) और पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक-एक
जन की गिनती की जाए। [3] तुम और हारून उन लोगों को
गिनें, जो 20 वर्ष या उस से अधिक उम्र के हैं और फ़ौज में
काम करने लायक हों। [4] तुम्हारे साथ एक-एक गोत्र का एक
एक पुरूष भी हो, जो अपने पूर्वजों के घराने का खास आदमी
हो। [5] तुम्हारे उन साथियों के नाम हैं - रूबेन के गोत्र में से
शदेअर का बेटा एलीसून [6] शिमोन के गोत्र में से सूरी शद्दै का
बेटा शलूमीएल [7] यहूदा के गोत्र में से अम्मीनादाब का बेटा
नहशोन [8] इस्साकार के गोत्र में से सूआर का बेटा जबूलून के
गोत्र में से हेलोन का बेटा एलीआब [10] यूसुफ़ वंशियों में से
एप्रैम के गोत्र में से अम्मीहूद का बेटा एलीशामा और मनश्शे
के गोत्र में से पदासूर का बेटा गमलीएल [11] बिन्यामीन के
गोत्र में से गिदोनी का बेटा अबीदान, [12] दान के गोत्र में से
अम्मीशद्दै का बेटा अहीहेज़ेर [13] आशेर के गोत्र में से ओक्रान का
बेटा पगीएल [14] गाद के गोत्र में से दूएल का बेटा एल्यासाप
[15] नप्ताली के गोत्र में से एनाम का बेटा अहीरा [16] पूरे झुण्ड में
से जो आदमी अपने अपने बुज़ुर्गों के गोत्रों के मुखिया होकर
बुलाए गए, वे सब यही हैं और एस्राएलियों के हज़ारों में
खास आदमी थे [17] जिन आदमियों के नाम ऊपर लिखे हैं, उन
सभी को मूसा और हारून ने साथ लिया [18] उन्हों ने दूसरे
महीने के पहले दिन सभी को इकट्ठा किया। तब इस्राएलियों
ने अपने - अपने पूर्वजों के घराने के अनुसार बीस साल या
उस से से ज़्यादा उम्र वालों के नामों की गिनती करवायी और
अपनी-अपनी वंशावली लिखवायी। [19] जिस तरह याहवे से
मूसा को आदेश मिला थे , वैसा ही जंगल में उस ने किया।
[20] इस्राएल के पहलौठे रूबेन के वंश के जितने आदमी अपने
गोत्र और अपने पूर्वजों के घराने के अनुसार बीस साल या
उस से ऊपर थे और युध्द में शामिल होने के लायक थो, वे
सभी अपने -अपने नाम से गिने गए [21] रूबेन के गोत्र से साढ़े
छियालीस हज़ार लोग थे [22] शिमोन के वंश के जितने आदमी
अपने गोत्रों और अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार बीस साल
या उस से अधिक उम्र के थे, और जो युध्द करने के लायक थे,
वे सभी अपने नाम से गिने गए [23] शिमोन के गोत्र के गिने हुए
आदमी उनसठ हज़ार तीन सौ थे [24] गाद के वंश के जितने
आदमी अपने गोत्रों और पूर्वजों के घरानों के अनुसार बीस
वर्ष या उस से अधिक थे, जो लड़ाई में शामिल होने लायक
थे वे सभी अपने -अपने नाम से गिने गऐ । [25] गाद के गोत्र से
पैंतालीस हज़ार साढ़े छै सौ आदमी थे। [26] यहूदा के वंश के
जितने आदमी अपने गोत्रों और पूर्वजों के घरानों के मुताबिक
बीस वर्ष या उस से अधिक आयु के थे और युध्द करने में योग्य
थे, उन सभी का नाम गिना गया। [27] यहूदा के गोत्र के चौहत्तर
हज़ार छ सौ थे । [28] इस्सार के वंश के जितने आदमी अपने
कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस साल या
उस से अधिक आयु के थे और फ़ौज में काम करने लायक थे
उनकी भी गिनती हुयी । [29] इस्साकार के वंश के वे पुरूष गिने
गए जिनकी उम्र बीस सा उस से अधिक थी । ये वे थे जो युध्द
में भाग ले सकते थे। [31] सत्तावन हज़ार चार सौ पुरूष जबूलून
के गोत्र के थे । [32] यूसुफ़ के वंश में से एप्रैम के वंश के वे पुरूष
अपने कुलों और पूर्वजों के घरानो के अनुसार चुने गए, जो
बीस वर्ष या उस से अधिक थे, और सैनिक का काम कर सकते
थे । [33] साढ़े चालीस हज़ार एप्रैम गोत्र के पुरूष थे । [34] मनश्शे
के वंश के वंश से भी इसी तरह का चुनाव हुआ । [35] मनश्शे
गोत्र के पुरूषों की संख्या चालीस हज़ार थी । [36] अपने कुलों
और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बिन्यामीन वंश के 20
वर्ष और उस से अधिक आयु के वे पुरूष जो युध्द कर सकते थे,
गिन लिए गए । [37] ये सभी गिनती में पैंतीस हज़ार चार सौ थे
। [38] दान के वंश के भी योग्य बीस या उसके ऊपर के आदमियों
को चुना गया । [39] दान के इन लोगों की संख्या बासठ हज़ार
सात सौ थी । [40] आशेर के वंश से भी इसी आयु के लड़ाई कर
सकने वालों की गिनती की गयी । [41] आशेर के गोत्र से साढ़े
इकतालीस हज़ार पुरूष थे । [42] नप्ताली के वंश से भी इस तरह
की गिनती की गयी. [43] ये लोग तिरपन हज़ार चार सौ थे ।
[44] इस तरह से मूसा, हारून और इस्राएल के बारह प्रधानों ने,
जो कि अपने अपने पूर्वजों के घराने के मुखिया थे, उन सभी
को गिना । [45] बीस साल या उस से अधिक उम्र के वे लोग
जो युध्द कर सकते थे, अलग किए गए। [46] कुल मिलाकर छैः
लाख, तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ पुरूष थे । [47] लेवीय अपने
पूर्वजों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए । [48] याहवे ने मूसा
को आज्ञा दी थी [49] कि लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के
साथ न करें । [50] लेकिन लेवियों की गवाही के तम्बू पर और
उसके सारे समान पर और जो कुछ उसे से सम्बन्ध रखता है
उस पर प्रबन्धक ठहराने को कहा गया । उन्हें समान सहित
निवास को उठाने की ज़िम्मेंदारी दी गयी थी । वे ही वहाँ

सेवा करने के लिए ठहराए गए। तम्बू के आस पास उन्हें डेरा डालने को कहा गया। 51 निवास को कहीं और ले जाने पर लेवी ही उसे गिराएँ। जब खड़ा करना हो तो वे ही करें। किसी और के निकट आने पर उसे मार डाला जाए। 52 इस्राएली अपना -अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में और अपने-अपने झुण्ड के पास खड़ा करें। 53 लेवीय अपने तम्बू गवाही के तम्बू के चारों तरफ़ खड़े करें। ऐसा इसलिए कि इस्राएलियों पर गुस्सा न भड़क उठे। लेवी साक्षी के तम्बू को सुरक्षा दें। 54 मूसा को याहवे से मिले आदेश के अनुसार उस ने किया।

2 1,2 एक दिन याहवे ने मूसा से कहा, "इस्राएलियों से कहो कि मिलनेवाले तम्बू (मिलाप-तम्बू) के चारों ओर, और उसके सामने अपने-अपने झण्डे खड़े करें। वे अपने पूर्वजों के घराने के चिन्ह के पास अपने तम्बू लगाएँ। 3 पूर्व की तरफ़ अपने दलों के अनुसार डेरे लगाएँ। वे ही यहूदा की छावनी वाले झण्डे लोग होंगे। अम्मीनादाब का बेटा नहशोन उनका प्रधान होगा। 4 उन के दल के गिने हुए चौहत्तर हज़ार छः सौ आदमी थे। 5 उन के पास वे इस्साकार के गोत्र के तम्बू लगाएँ। सुआर का बेटा नतनेल उनका प्रधान ठहरे। 6 गिनती में उन के दल के चौवन हज़ार चार सौ पुरूष थे। 7 इन के पास ज़बूलून के गोत्र वाले रहेंगे। हेलोन का बेटा एलीआब उनका मुखिया ठहरेगा। 8 गिनती में उन के दल के सत्तावन हज़ार चार सौ पुरूष थे। 9 इस तरह से यहूदा की छावनी में जितने अपने -अपने दलों के अनुसार गिने गए, वे सभी कुल मिलाकर एक लाख छियासी हज़ार चार सौ हैं। सब से पहले ये ही चल पड़ें। 10 दक्षिण दिशा की तरफ़ रूबेन की छावनी के झण्डे के लोग अपने दलों के अनुसार रहें। शदेऊर का बेटा एलीसूर उसका अगुवा होगा। 11 उन के दल के गिने हुए पुरूष साढ़े छियालीस हज़ार हैं। 12 शिमोन के गोत्र के डेरे उन के पास खड़े किए जाएँ। उनका प्रधान सूरीशद्दै का बेटा शलूमीएल होगा। 13 उन के दल के गिने हुए पुरूष उन्सठ हज़ार तीन सौ हैं। 14 गाद के दल का प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा। 15 उन के दल के गिने हुए पुरूष पैतालीस हज़ार साढ़े छैः सौ हैं। 16 रूबेन की छावनी में जितने अपने अपने दल के अनुसार गिने गए, वे कुल मिलाकर डेढ़ लाख एक हज़ार साढ़े चार सौ है। ये लोग फिर निकल पड़े। 17 इन लोगों के पीछे और सभी छावनियों के मध्य लेवी लोगों की छावनी सहित मिलाप वाले तम्बू को रवाना किया जाए। जिस तरतीब से वे तम्बू लगाएँ,उसी तरतीब से वे अपनी-अपनी जगह पर अपने-अपने झण्डे के पास-पास चलें। 18 पश्चिम की ओर एप्रैम की छावनी के झुण्ड के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें। उनका नेतृत्व अम्मीहूद का बेटा एलीशामा करे। 19 उन के दल में कुल आदमी साढ़े चालीस हज़ार हैं। 20 मनश्शे के गोत्र उन के पास रहें। पदासूर का बेटा गमलीएल उनकी अगुवाई करे। 21 उन के दल के गिने हुए पुरूष बत्तीस हज़ार दो सौ हैं। 22 इसके बाद बिन्यामीन गोत्र के रहें। उनका प्रधान गिदोनी का बेटा अबीदान होगा। 23 इस दल के पैंतीस हज़ार चार सौ आदमी है। 24 एप्रैम की छावनी के गिने हुए एक लाख आठ हज़ार एक सौ पुरूष थे। इन का तीसरा गोत्र है। 25 उत्तर की ओर दान की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलो के मुताबिक रहें। उनका प्रधान अम्मीशद्दै का बेटा अहीऐज़ेर होगा। 26 उन के पुरूषों की संख्या बासठ हज़ार सात सौ है। 27 उन के पास आशेर गोत्र के डेरे खड़े किए जाएँ। पगीएल जो ओकान का बेटा है वह उन का मुखिया ठहरे। 28 उन के दल में पुरूषों की संख्या साढ़े इकतालीस हज़ार है 29 तत्पश्चात नप्ताली के गोत्र के लोग होंगे और उनका अध्यक्ष एनान का पुत्र अहीरा होगा। 30 तिरपन हज़ार उन के दल के लोग होंगे। 31 दान की छावनी में गिने लोग डेढ़ लाख सात हज़ार छैः सौ हैं। ये लोग अपने-अपने झण्डे के पास से होकर सब से बाद में निकले। 32 अपने पूर्वजों के घराने के अनुसार जब गिनती की गयी तो वे सब मिलाकर छः लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ थे। 33 लेकिन याहवे ने मूसा को जो आदेश दिया उसके अनुसार लेवीय इस्राएलियों में नहीं गिने गए। 34 जो निर्देष याहवे ने मूसा को दिए उसी तरह अपने गोत्रों, और पूर्वजों के घरानों के अनुसार अपने झण्डे के पास डेरे लगाते थे और निकल पड़ते थे।

3 1 सीनै पहाड़ के पास मूसा से परमेश्वर की बातचीत के समय हारून और मूसा की वंशावली यह थी। 2 हारून के बेटों के नाम नादाब, अबीहू, एलीआज़ार और ईतामार थे। 3 हारून के जो बेटे अभिषिक्त पुरोहित (याजक) थे और इस कार्य के लिए अलग किए गए थे, वे यही हैं। 4 जिस समय सीनै के जंगल में याहवे के सामने नादाब और अबीहू ऊपरी आग ले गए थे, वे मर गए थे। उन के कोई सन्तान उस समय नहीं थी। तभी एलीआज़ार और ईतामार अपने पिता हारून के सामने पुरोहित का काम करते रहे। 5 फिर याहवे ने मूसा से कहा, 6 लेवी कबीले के लोगों को पास ले आकर हारून के सामने खड़ा करो, ताकि वे सेवा करें। 7 जो कुछ उसकी तरफ़ से और सारी मण्डली की तरफ़ से उन्हें सुपुर्द किया जाए, वे उसकी देख-रेख करें। 8 वे मिलाप वाले तम्बू के सारे सामान की और इस्राएलियों की दी गयी चीज़ो की भी रखवाली करें। 9 तुम लेवियों को हारून और उसके बेटो को सौंप देना। वे पूरी तरह से इस्राएलियों की ओर से हारून को अर्पित किए गए हों। 10 हारून और उसके बेटों को पुरोहित पद पर रखा जाए। वे अपने पद को संभाल कर रखें। किसी दूसरे व्यक्ति

के पास आने पर वह मार डाला जाए। 11 याहवे ने मूसा से
कहा, 12 "इस्राएली महिलाओं के सभी पहलौठों के बदले में
इस्राएलियों में से लेवियों को ले लेता हूँ। इसलिए लेवीय मेरे
ही ठहरें । 13 सारे पहलौठे मेरे ही होंगे । जिस दिन मैंने मिस्र
देश में पहलौठों को मारा था, उसी दिन से मैंने इन्सान और
जानवर दोनों ही के पहलौठों को अलग ठहराया । इसलिए
वे मेरे ही होंगे, मैं याहवे हूँ। 1415 सीनै के जंगल में मूसा से
याहवे ने कहा " लेवियों में से जितने नर महीने या उस से
अधिक हों, उनको उन के पितरों और गोत्रों के अनुसार गिन
लो । 16 परमेश्वर से यह आदेश पाकर मूसा ने याहवे के कहे
अनुसार उनको गिन लिया । 17 लेवी के बेटों के नाम ये हैं -
गेर्शोन, कहात और मरारी । 18 गोर्शोन के जिन बेटों से उसके
कुल चलते गए, उन के नाम हैं लिब्नी और शिमी । 19 कहात
के जिन बेटों के कुल आगे बढ़े वे हैं - अम्राम, यिसहार, हेब्रोन
और उज्जीएल । 20 मरारी के बेटे जिन से उसके कुल चले वे हैं
- महली और मूशी । ये लेवियों के कुल अपने पूर्वजों के घरानों
के अनुसार है । 21 गेर्शोन से लिब्नियों और शिमियों के कुल
शुरू हुए । 22 इन में से जितने लोगों की उम्र एक महीने या
उस से अधिक थी, उन सब की गिनती साढ़े सात हज़ार थी ।
23 गेर्शोन वाले गोत्र, निवास के पीछे पश्चिम की ओर अपने डेरे
डाला करें । 24 गेर्शोनियों के मूलपुरूष से परिवार का मुखिया
लाएल का बेटा एल्यासाप हो । 25 मिलाप वाले तम्बू की जो
वस्तुएँ गेर्शोन वंशियों को सुपुर्द की जाएँ वे होंगी - निवास
और तम्बू, ओहार और मिलाप वाले तम्बू से दरवाज़े का पर्दा
। 26 जो आंगन निवास और वेदी के चारो ओर है, उसक पर्दे
और उसके दरवाज़े का पर्दा और सभी डोरियाँ जो उस में
काम आती है । 27 फिर कहात से अम्रामियों, यिसहारियों,
हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों के गोत्रों की शुरूवात हुयी ।
28 जितने नर की उम्र एक महीने की या उस से अधिक थी
उनकी संख्या आठ हज़ार छः सौ थी । उन्हें पवित्र स्थानों की
रखवाली करनी थी । 29 काहाती गोत्र निवास की उस अलंग
पर अपने डेरे डालें जो दक्षिण की ओर है. 30 कहात वाले
गोत्रों से मूलपुरूष के परिवार का मुखिया उज्जीएल का बेटा
एलीसापान है। 31 उनको सौंपी जाने वाली वस्तुएँ सन्दूक,
मेंज़, दीवट 32 हारून पुरोहित का बेटा एलीआज़र लेवियों
के प्रधानों का प्रधान हों। पवित्रस्थान की वस्तुओं की रक्षा
करने वालों के ऊपर वह अधिकारी है। 33 मरारी से महलियों
और मूशियों के कुल प्रारम्भ हुए। 34 एक महीने से अधिक उम्र
वालों की संख्या छैः हज़ार दो सौ थी। 35 मरारी के कुलों के
मूलपूरूष के घराने का प्रधान अबीहैल का बेटा सूरीएल हो।
इन के डेरे निवास के उत्तर की ओर हों। 36 जो वस्तुएँ मरारी
वंशियों को सौंपी जाएँ, वे उनकी देख-रेख करें, वे निवास के
तख्ते, बेड़े, खम्भे, कुर्सियाँ और सारा सामान। 37 चारों ओर
के आँगन के खम्भे और उनकी कुर्सियाँ, खूंटे और डोरियाँ हों।
38 पूर्व की ओर मूसा और हारून और उसके बेटों के तम्बू हों।
इस्राएलियों के बदले में वे पवित्रस्थान की रक्षा करें। अन्य
कोई यदि पास आता है तो उसे मार दिया जाए। 39 एक महीने
से अधिक आयु वाले जितने लेवीय पुरूष थे, उन्हें मूसा और
हारून ने गिना। इनकी संख्या 22 हज़ार थी। 40 याहवे ने मूसा
से कहा : एक महीने से अधिक सभी पहलौठे (नर) की गिनती
कर लो। 41 पहलौठों की जगह लेवियों को और इस्राएलियों के
पशुओं के सब पहलौठो के बदले लेवियों के पशुओं को लो । मैं
याहवे हूँ । 42 याहवे का यह निर्देष पाकर मूसा ने इस्राएलियों
के सभी पहलौठों को गिन लिया । 43 एक महीने से अधिक
आयु के लोगों की गिनती बाईस हज़ार दो सौ तिहत्तर थी।
44 याहवे ने मूसा से कहा, " इस्राएलियों के सभी पहलौठो
के बदले लेवियों को और उन के पशुओं के बदले लेवियों के
पशुओं को लो। लेवीय मेरे ही हों। मैं याहवे हूँ। 45 इस्राएलियों
के सभी पहलौठों के बदले लेवियों को और उन के पशुओं के
बदले लेवियों के पशुओं को लो। लेवीय मेरे हैं - मैं याहवे हूँ।
46 इस्राएलियों के पहलौठों में से जो दौ सौ तिहत्तर गिनती
में लेवियों से अधिक है, उन्हें छुड़ाने के लिए 47 एक आदमी
के पीछे पाँच शेकेल लो। पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से
वे हों, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो। 48 जो धन उन अधिक
पहलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून और उसके बेटों को
देना। 49 जो इस्राएली पहलौठे लेवियों के व्दारा छुड़ाए हुओं
से अधिक थे उन के हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रूपया लिया।
50 एक हज़ार तीन सौ पैंसठ शेकेल पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाब से वसूल हुआ। 51 याहवे के हुक्म के अनुसार मूसा ने
छुड़ाए हुओं का रूपया हारून और उसके बेटों को दे दिया।

4 1 याहवे ने मूसा और हारून से कहा, 2 लेवी लोगों में से
कहातियों की उनकी गोत्रों और पूर्वजों के परिवारों के
आधार पर गिनती करो। 3 तीस साल से लेकर पचास साल
तक की उम्र वालों को फौज़ में जितने मिलाप वाले तम्बू में
काम-काज करने को भरती हैं । 4 मिलाप वाले तम्बू में अलग
की गयी (पवित्र) वस्तुओं के बारे में कहातियों का काम यह
होगा । 5 जब -जब छावनी चल पड़े तब-तब हारून और उसके
बेटे अन्दर आकर बीच वाले पर्दे को उतार कर उस से गवाही
पत्र के सन्दूक को ढाँप दें । 6 इसके बाद वे उस पर सूईयों
की खालों का ओहार डालें । इसके ऊपर पूरे नीले रंग का
कपड़ा डालें और सन्दूक में झण्डों को लगाएँ । 7 इसके पश्चात
भेंट वाली रोटी की मेंज पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर
थालियों, धूपदानों, करवों और उण्डेलने के कटोरों को रखें ।

हर दिन की रोटी भी उस पर हो। 8 तब वे उन पर लाल रंग
का कपड़ा बिछाएँ और सूइसों की खालों के ओहार से ढांककर
मेंज़ के डण्डों को लगा दें। 9 नीले रंग का कपड़ा लेकर दीयों
गुलतराशों और गुलदानों समेत रोशनी देने वाले दीवट और
उसके सभी तेल के बर्तनों को जिन से उसकी सेवा होती है,
ढाँपे। 10 तब वे समस्त सामान के साथ दीवट को सूइसों की
खालों के ओहार के अन्दर रखकर झण्डे पर रख दें। 11 फिर वे
सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाएँ, सुइसों की खालों
के ओहार से ढाँपे और उसके झण्डों को लगा दें। 12 तब वे सेवा
के सभी सामान को लें, जिस से पवित्रस्थान में सेवा होती
है, नीले कपड़े के अन्दर रखकर सूइसों की खालों के ओहार
से ढाँके और झण्डे पर रख दें। 13 फिर वे वेदी पर से सारी
रख उठाकर वेदी पर बैंजनी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14 तब
जिस समान से वेदी की सेवा होती है वह सब - करछे, काँटे,
फावड़ियाँ, कटोरे आदि वेदी पर रखकर उसके ऊपर सुइसों की
खालों को ओहार बिछाकर वेदी में झण्डों को लगाएँ। 15 जब
हारून और उसके बेटे छावनी के निकलते समय पवित्रस्थान
और उसके सारे सामान को ढाँक चुकें तब उसके बाद कहाती
उसे उठाने के लिए आएँ। लेकिन किसी वस्तु को न छुएँ नहीं
तो मर जाएँगे। कहातियों के उठाने के लिए मिलाप वाले तम्बू
की ये ही वस्तुएँ है। 16 हारून पुरोहित के बेटे एलिआज़र
को रखवाली के लिए जो वस्तुएँ सुपुर्द की जाएँ वे ये होंगी -
रोशनी देने के लिए तेल, खुशबूदार धूप, हर दिन अन्नबलि,
अभिषेक का तेल, सभी निवास और उस में की सभी वस्तुएँ
और पवित्र स्थान तथा उसका सारा सामान 17 फिर याहवे ने
मूसा और हारून से कहा, 18 कहातियों के कुलों के गोत्रियों को
लेवियों में से बर्बाद न होने देना। 19 हारून और उसके बेटे
अन्दर आकर एक-एक के लिए उसकी सेवा और ज़िम्मेंदारी
ठहरा दें ताकि बेकार में कोई न मरे। 20 पवित्र वस्तुओं को
देखने के लिए वे एक सेकेण्ड भी अन्दर न आएँ ताकि जीवित
रहें। 21 फिर याहवे का वचन मूसा को मिला, 22 वह यह कि
गेर्शोनियों की गिनती उन के पूर्वजों के घरानों और कुलों के
अनुसार करे। 23 तीस साल से पचास साल तक की उम्र वाले,
जितने मिलाप वाले तम्बू में सेवा करने के लिए फौ़ज में
भर्ती हो, उनकी गिनती कर ले। 24 सेवा करने और बोझा
उठाने में गेर्शोनियों के कुल वालों का यह काम हो। 25 निवास
के पटों और मिलाप वाले तम्बू और एसके ओहार और उसके
ऊपर वाले तम्बू के दरवाज़े के पर्दे, 26 और निवास और वेदी
के चारों ओर के आंगन के पर्दो और आंगन के दरवाज़े के पर्दे
और उनकी डोरियों और उन में काम आने वाले सारे सामान
को उठाया करें। इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह
सभी उनकी सेवकाई में आए। 27 गेर्शोनियों के वंश की सभी
सेवा हारून और उसके बेटों के कहने से हुआ करे। मतलब यह
है कि जो कुछ उठाना हो, जो सेवा करनी हो उसकी सारी
ज़िम्मेंदारी तुम उन्हें सौंपो। 28 गेर्शोनियों के कुलों की यह
सेवा मिलाप वाले तम्बू में हुआ करे। हारून पुरोहित का बेटा
ईतामार उन पर अधिकार रखे। 29 मरारियों को तुम उन के
कुलों और पूर्वजों के घरानों के अनुसार गिनो। 30 मिलाप
वाले तम्बू में तीस साल से पचास साल तक की आयु वाले जो
सेवा में आए, उनकी गिनती की जाए। 31 मिलाप वाले तम्बू
की जिन वस्तुओं के उठाने का काम उनको मिले वे ये हों -
निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे और कुर्सियाँ। 32 चारों ओर के
आंगन के खम्भे इनकी कुर्सियों, खूँटे, डोरियाँ और तरह के
बरतनों का सामान और जो सामान ढोने के लिए उन्हें सौंपा
जाए उस में से एक -एक चीज़ का नाम लेकर तुम गिनना
। 33 मरारियों के कुलों की पूरी सेवा जो उन्हें मिलाप वाले
तम्बू के बारे में करनी होगी, वह यही है। यह भी हारून के
बेटे ईजामार के अधिकार में हो। 34 तब मूसा, हारून और
मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को उन के कु ूलों और
पितरों के घरानों के अनुसार 35 उन सभी की गिनती करना,
जो तीस वर्ष से पचास वर्ष की उम्र के थे। ये लोग तम्बू की
सेवा के लिए फौ़ज में भर्ती हुए थे। 36 जो लोग अपने-अपने
कुल के अनुसार गिने गए थे, वे दो हज़ार साढ़े सात सौ थे।
37 कहातियों के कुलों में से जितने लोग मिलाप वाले तम्बू में
सेवा करने वाले थे वे ये ही हैं। जो आदेश याहवे ने मूसा को
दिया था, उसी के आधार पर मूसा और हारून ने इन्हें गिन
लिया। 38 अपने कुलों और पितरों के अनुसार गेर्शोनियों में
से गिने गए वे वही थे जो 39 से पचास साल के थे और तम्बू
में सेवा काम के लिए सेना में भरती हुए थे। 40 उनकी संख्या
उन के कुलों और पितरों के घराने के अनुसार दो हज़ार छः सौ
तीस थी। 41 गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलाप वाले
तम्बू में सेवा करने वाले गिने गए, वे इतने ही थे। याहवे की
आज्ञानुसार मूसा और हारून ने इन्हें गिन लिया। 42 फिर
मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों
के अनुसार गिने गए। 43 अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष
तक की आयु के जो मिलाप वाले तम्बू की सेवा करने को सेना
में भरती हुए थे। 44 उनकी गिनती उन के कुलों के अनुसार
तीन हज़ार दो सौ थी। 45 मरारियों के कुलों में से जिन्हें मूसा
और हारून ने याहवे की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के
व्दारा मिली थी, गिन लिया। 46 लेवियों में से मूसा, हारून
और इस्त्राएली प्रधानों ने उन के कुलों और पितरों के घरानों
के अनुसार गिना। 47 ये वे लोग थे जिनकी उम्र तीस से पचास
साल के बीच थी। इन का काम मिलाप वाले तम्बू में सेवा
का था। ये बोझा भी उठाया करते थे। 48 इनकी संख्या आठ

हज़ार पाँच सौ अस्सी थी। 49 ये लोग अपनी अपनी सेवा और
बोझ ढोने के अनुसार याहवे के कहने पर गए। याहवे की मूसा
को दी गयी आज्ञा के मुताबिक सब कुछ किया।

5 1 मूसा से याहवे बोले, 2 इस्त्राएलियों को ऐसा आदेश
दो कि वे कुष्ट रोग, प्रमेह और शव के कारण अशुध्द
हुए लोगों को छावनी के बाहर रखें। 3 ताकि मेरा निवास
स्थान गन्दा न हो जाए। 4 इस्त्राएलियों ने याहवे के आदेश
के अनुसार किया भी 5,6 याहवे ने मूसा से कहा "यदि कोई
महिला या पुरूष अपराध कर के परमेश्वर का विश्वासघात
करे। 7 तो वह कबूल कर ले, जिसके बारे में वह दोषी हुआ
हो, उसे वह मूल में पाँचवाँ अंश मिलाकर दण्ड के रूप में दे।
8 यदि उस व्यक्ति का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला
भर दिया जाए, तो उस दोष का बदला याहवे को भरा जाए।
वह पुरोहित का हिस्सा हो। वह प्रायश्चित्त वाले मेंढ़े से हो
जिस से उसके लिऐ प्रायश्चित किया जाए। 9 जितनी पवित्र
की हुयी वस्तुएँ इस्त्राएली उठायी हुयी भेंट करके पुरोहित
के पास लाएँ, वे उसी की हों। 10 सभी लोगों की पवित्र की
हुयी वस्तुएँ उसी की रहें। जो पुरोहित को दे, वह उसी का
ठहरे। 11,12 मूसा से याहवे ने कहा, "इस्त्राएलियों को बतलाओ
कि यदि किसी व्यक्ति की पत्नी बुरी राह अपनाकर पति का
विश्वासघात करे, 13 किसी पुरूष के साथ कुकर्म की बात पति
से छिपी रहे, लेकिन न वह कुकर्म में पकड़ी गयी हो, या कोई
गवाह भी न मिला हो। 14 और उसके पति के मन में क्रोध हो,
अर्थात् वह अपनी पत्नी से उसके भ्रष्ट होने के कारण नफ़रत
करने लगे या उसके भ्रष्ट न होने पर भी वह उस से नफ़रत
करने लगे। 15 ऐसे में वह व्यक्ति अपनी पत्नी को पुरोहित के
पास ले जाए और उसके लिए एपा का दसवाँ और जव का
मैदा चढ़ावा करके ले आए। लेकिन यदि उस पर तेल न डाले,
लोबान न रखे, वह जलन वाला और अधर्म को याद दिलाने
वाला अन्नबलि होगा। 16 तब पुरोहित उस महिला को पास ले
ज़ाकर याहवे के सामने खड़ी करे। 17 पुरोहित मिट्टी के बर्तन में
पानी लेकर निवासस्थान की ज़मीन की धूल में से कुछ लेकर
उस पानी में डाल दे। 18 तब पुरोहित उस महिला को याहवे
के सामने खड़ी करके उसके सिर के बाल बिखराए। और याद
दिलाने वाले अन्नबलि को जलन वाला है, उसके हाथों पर रख
दे। पुरोहित अपने हाथ में कड़वा पानी लिए रहे, जो शाप
लगाने का कारण होगा। 19 तब पुरोहित उस महिला को शपथ
धरवाकर कहे कि यदि किसी पुरूष ने तुम से बुरा काम न
किया हो और तुम पति को छोड़ दूसरे से सम्भोग कर अशुध्द
न हुयी हो, तो तुम इस कड़वे पानी के गुण से जो शाप का
कारण होता है, बची रहो। 20 यदि तुम अपने पति को छोड़
दूसरे के साथ सम्बन्ध करके अशुध्द हो गयी हो और तुम्हारे
पति को छोड़ तुम्हारे साथ किसी और ने सहवास किया हो।
21 पुरोहित उसे शाप देने वाला प्रण करवाए,"याहवे तुम्हारी
जाँघ सड़ाए, पेट फुलाए और लोग तुम्हारा नाम लेकर शाप दें
और धिक्कारें। 22 जो पानी शाप का कारण होता है, तुम्हारी
अतड़ियों में जाकर तुम्हारे पेट को फुलाए और तुम्हारी जाँघ
सड़ा दे। तब वह महिला कहे ऐसा ही हो। 23 तब पुरोहित
शाप के ये शब्द किताब में लिखकर उस कड़वे पानी से मिटाके
24 उस महिला को वह कड़वा पानी पिलाए, जो शाप का
कारण होता है और वह पानी जो शाप का कारण होता है,
उस महिला के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा। 25 पुरोहित
महिला के हाथ में से जलन वाले अन्नबलि को लेकर याहवे के
आगे हिला कर वेदी के पास पहुँचाए 26 पुरोहित उस अन्नबलि
में से उसका याद दिलाने वाला हिस्सा, अर्थात् मुट्ठी भर लेकर
वेदी पर जलाए। उसके बाद महिला को वह पानी पिलाए।
27 उसे वह पानी पिलाने के बाद यदि वह अशुध्द हुयी हो
और अपने पति का विश्वासघात किया हो तो वह पानी जो
शाप का कारण होता है, उस महिला के पेट में जाकर कड़वा
हो जाएगा। उसका पेट फूलेगा, उसकी जाँघ सड़ जाएगी। उस
महिला के लोगों में उस की बदनामी होगी। 28 यदि व महिला
अशुध्द न हुयी हो तो वह निरपराध ठहरेगी और गर्भवती भी
हो सकेगी। 29 जलन के सम्बन्ध में यही तरीका है, चाहे कोई
औरत अपने आदमी को छोड़ दूसरे की ओर फिकर अशुध्द हो।
30 चाहे पुरूष के मन में जलन पैदा हो और वह अपनी पत्नी से
नफ़रत करने लगे तो वह उसे परमेश्वर की उपस्थिति में लाए
और पुरोहित के निर्देष अनुसार कारवाई करे। 31 तब पुरूष
अधर्म के परिणाम से बचा रहेगा लेकिन महिला को अपनी
गलती का भार खुद उठाना पड़ेगा।

6 1 याहवे ने मूसा से कहा, 2 "इस्त्राएलियों से यह कहो
कि जब कभी कोई आदमी या औरत नाज़ीर की मन्नत
(स्वयं को याहवे के लिए अलग करने) माने 3 तो वह दाखमधु,
शराब, सिरके आदि से परे रहे। यहाँ तक कि सूखे अंगूर भी
न खाए। 4 जितने समय तक वह अपनी इस स्थिति में रहे,
उतने दिन अंगूर की लता में से कुछ न खाए। 5 उतने दिन
अपने सिर के बाल भी न कटवाए। पूरा समय हो जाने पर
वह याहवे के लिए अलग रहे। तभी वह पवित्र ठहरेगा और
अपने सिर के बालों को बढ़ाए रहे। 6 उतने दिन वह किसी
शव के पास न जाए। 7 चाहे उसके निकट सम्बन्धी :पिता,
माता, भाई, बहन भी मरें, उन के कारण वह अशुध्द न हो।
यह परमेश्वर के प्रति समर्पण का चिन्ह होगा। 8 अपने अलग
रहने के दिनों में वह याहवे के लिए पवित्र रहे। 9 यदि अचानक

कोई मर जाए और उसके रहने का जो चिन्ह उसके सिर पर होगा, वह अशुध्द हो जाए, तो वह शुध्द होने के दिन अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए। 10 आठवे दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़ों पर पुरोहित के पास ले जाए। 11 पुरोहित एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि करके उसके लिए प्रायश्चित्त करे, क्योंकि वह लाश के कारण अपराधी ठहरा है। पुरोहित उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे । 12 वह अपने अलग रहने के दिनों फिर याहवे के लिए अलग ठहराए। वह एक साल का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि कर के ले आए। जो दिन इस से पहले बीत गये हो, वे बेकार समझ जाएँ, क्योंकि उसके अलग रहने का चिन्ह अशुध्द हो गया । 13 नाज़ीर के अलग रहने के दिन पूरे होने पर तरीका यह होगा - वह यह कि उसे मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर पहुँचाया जाए । 14 वह याहवे के लिए होमबलि करके एक साल का एक बिना खीर की भेड़ की बच्ची और मेलबलि के लिए एक निर्दोष मेंढा 15 अखमीरी रोटियाँ की एक टोकरी अर्थात् तेल से सने मैदे के फुलके, तेल से चुपड़ी अखमीरी पपड़ियाँ और उन बलियों के अन्नबलि और अर्ध : ये सब चढ़ावे समीप ले आए । 16 इन सब को पुरोहित याहवे के सामने पहुँचाकर उसके पापबलि और होमबलि को चढ़ाए 17 अखमीरी रोटी की टोकरी सहित मेंढ़े को याहवे के लिए मेलबलि करके, उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्ध को चढ़ाए 18 तब नाज़ीर अपने अलग रहने के निशान वाले सिर को मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर मुण्डाकर अपने बालों को उस अग्नि पर डाले जो मेलबलि के नीचे होगी । 19 जब नाज़ीर अपने अलगाव के जीवन के कारण निशान वाले सिर को मुण्डा चुके तब पुरोहित मेंढ़े का पकाया हुआ कन्धा टोकरी में से अखमीरी रोटी और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाज़ीर के हाथों पर रखें । 20 पुरोहित इन को हिलाने की भेंट करके याहवे के सामहने हिलाए। हिलायी हुयी छाती और उठायी हुई जांघ सहित ये भी पुरोहित के लिए पवित्र ठहरें। इसके बात वह नाज़ीर दाखमुध पी पाएगा। 21 नाज़ीर की मन्नत की और जो चढ़ावा उस ने अपने अलग होने के कारण याहवे के लिए चढ़ाना होगा, उसका भी यही तरीका है। जो चढ़ावा वह अपनी पूँजी के अनुसार चढ़ा सके उस से अधिक जैसी मन्नत उस ने मानी हो, वैसे ही अपने अलगाव के जीवन के तरीके के अनुसार उसे करना पड़ेगा। 22 इसके बाद याहवे ने मूसा से कहा, 23 "हारून और उसके बेटों से कहो कि तुम इस्त्राएलियों को इन शब्दों से आशीष दिया करना", 24 याहवे तुम्हे आशीष दे और रक्षा प्रदान करें। 25 वह अपनी उपस्थिति का अनुभव तुम्हें दें । 26 याहवे अपनी दृष्टि तुम्हारी ओर करें और शान्ति दें । 27 इस तरह से वे मेरे नाम को इस्त्राएलियों के सामने लाएँ मैं उन्हें अपनी भलाई से तृप्त करूँगा।

7 1 फिर मूसा ने निवास को खड़ा किया । उस ने सारे समान का अभिषेक किया । और सामान सहित वेदों का भी अभिषेक करके उसे पवित्र (अलग) किया । 2 तब इस्त्राएल के मुखिया जो अपने अपने पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरूष और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम कर नियुक्त थे 3 वे याहवे के सामने भेंट लेकर आए । इस भेंट में छः छाई हुयी गाड़ियाँ और बारह बैल थे। दो-दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी और एक -एक प्रधान की ओर से एक -एक गाड़ी और एक -एक प्रधान की तरफ़ से एक -एक बैल । निवास के सामने याहवे के पास उन्हें वे ले गए। 4 तब याहवे ने मूसा से कहा, 5 "उन वस्तुओं के तुम उन से ले लो, कि मिलाप वाले तम्बू की सेवा में काम आए। इसलिए तुम उन्हें लेवियों के एक-एक कुल की विशेष सेवा के अनुसार उनको बाँट दो। 6 इसलिए लेवियों को मूसा ने सब गाड़ियाँ और बैल दे दिए। 7 गेर्शोनियों को उन के काम के अनुसार उस ने दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए 8 मरारियों को उन के काम के अनुसार उस ने आठ बैल और चार गाड़ियाँ दीं । हारून पुरोहित के बेटे ईतामार के अधिकार में इन सभी को रखा गया । 9 कहातियों को कुछ भी नहीं दिया गया । उन के लिए पवित्र वस्तुओं की सेवा यह थी कि वे अपने कन्धों पर उसे उठाएँ। 10 वेदी के अभिषेक के समय प्रधान उसके संस्कार की भेंट वेदी के पास ले जाने लगे । 11 तब याहवे ने मूसा से कहा, "वेदी के संस्कार के लिए प्रधान लोग अपनी अपनी भेंट अपने - अपने निश्चित दिन पर चढ़ाएँ ।" 12 जो पुरुष पहले दिन अपनी भेंट को ले गया वह यहूदा गोत्र वाले अम्मीनादाब का बेटा नहशोन था । 13 उसकी भेंट थी : पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार से एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थाली, सत्तर शेकेल चाँदी का कटोरा । ये दोनों ही अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से भरे थे । 14 धूप से भरे दस शेकेल सोने का धूपदान 15 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा, एक साल का भेड़ी का बच्चा 16 पापबलि के लिए एक बकरा 17 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक-एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे । यह भेट अम्मीनादाब के बेट नहशोन की थी । 18 अगले दिन इस्साकार का प्रधान सूआर का बेट नतनेल भेंट लाया । 19 यह पवित्रस्थान के शेकेले चाँदी की थाली और सत्तर शेकेल चाँदी का कटोरा था । ये दोनों ही अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से भरे थे । 20 धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 21 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का भेड़ी का बच्चा होमबलि के लिए 22,23 एक बकरा पापबल के लिए, दो बैल,

पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि के लिए । यह भेंट सूआर के बेटे नतनएल की थी । 24 तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन का बेटा एलीआब यह सब लाया 25 पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थाली और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा । ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे थे । 26 धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 27 होमबलि के लिए बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा 28 एक बकरा पापबलि के लिए 29 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि के लिए यह भेंट एलीआब की थी जो हेलोन का पुत्र था । 30 चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर कुछ भेंट लाया । 31 उसकी भेंट में पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का परात और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल सने मैदे से भरे थे । 32 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान । 33 होमबलि करने के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा। 34 पापबलि के लिए एक बकरा 35 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ों के बच्चे । शदेऊ के बेटे एलीसूर की भेंट यही थी । 36 पाँचवे दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्दै का बेटा शलूमीएल यह सब लाया 37 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थाली, सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे थे । 38 उसके बाद धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 39 एक बछड़ा, मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा होमबलि के लिए 40 एक बकरा पापबलि के लिए 41 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक साल की पाँच भेड़ी की बच्चियाँ । यह भेंट सूरीशद्दै के बेटे शलूमीएल की थी । 42 गादियों का मुखिया दूएल का बेटा एलयासाप यह भेंट छठवें दिन लाया 43 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थी । साथ ही सत्तर शेकेल चाँदी का एक प्याला । ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे । 44 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 45 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक वर्ष की भेड़ी का बच्चा 46 एक बकरा पापबलि के लिए, 47 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे, एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि के लिए एलयासाप जो दूएल का बेटा था, उसी की यह भेंट थी । 48 सावतें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का बेटा एलीशामा जो भेंट लेकर आया वह यह थी 49 पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक था, सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा - ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे थे । 50 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान । 51 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा होमबलि के लिए 52 एक बकरा, पापबलि के लिए 53 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि चढ़ाने के लिए । यह कुर्बानी अम्मीहूद के बेटे एलीशामा की थी । 54 मनेश्शेइयों का प्रधान पदासून का पुत्र गम्लीएल कुछ भेंट आठवें दिन लाया । 55 वह थी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का थाल, सत्तर शेकेल चाँदी का प्याला- ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से भरे हुए थे । 56 धूप से भरा दस शेकेल सोने का धूपदान 57 होमबलि के लिए बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा । 58 पापबलि के लिए एक बकरा 59 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ों के बच्चे मेलबलि के लिए । 60 नवे दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोरी का पुत्र अबीदाब यह भेंट लाया । 61 पवित्रस्थान के लिए शेकेल के हिसाब से एक सौ तीन शेकेल चाँदी का एक थाल, सत्तर शेकेल चाँदी का प्याला - ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे थे । 62 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 63 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा 64 पापबलि के लिए एक बकरा 65 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे । यह भेंट गिदोनी के बेटे अबीदान की भेंट थी । 66 दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्दै का बेटा अहीएजर यह भेंट ले आया । 67 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, सत्तर शेकेल चाँदी का प्याला -ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल मिले मैदे से भरे हुए थे । 68 धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान 69 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक वर्ष का भेड़ी का बच्चा होमबलि के लिए 70 पापबलि के लिए एक बकरा 71 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि के लिए । अम्मीशद्दै के बेटे अहीएज़ेर की भेंट रही थी । 72 ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का बेटा यह सब लाया । 73 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का थाल, सत्तर शेकेल चाँदी का कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से लिपटे मैदे से भरे थे 74 फिर धूप से भरा दस शेकेल सोने का एक धूपदान 75 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक वर्ष का भेड़ का बच्चा 76 पापबलि के उपयोग के लिए एक बकरा 77 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे, एक - एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि के लिए । यह भेंट ओक्रान के

बेटे पजीएल की थी । 78 बारहवें दिन नप्तालियों का मुखिया एनान का बेटा अहीरा कुछ भेंट लाया । 79 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का थाल, सत्तर शेकेल चाँदी से बना प्याला - ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से भरे थे। 80 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान 81 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का भेड़ा का बच्चा 82 पापबलि के लिए एक बकरा 83 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे, एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ के बच्चे। यह भेंट एनान के पुत्र अहीरा की थी। 84 वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों की ओर से संस्कार की कुर्बानी यही रही - अर्थात् चाँदी के बारह थाल, बारह कटोरे और सोने से बने धूपदान जिनकी संख्या बारह थी। 85 प्रत्येक चाँदी का थाल एक सौ तीस शेकेल, एक-एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था । पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार ये सभी चाँदी के बर्तन दो हज़ार चार सौ शेकेल के थे। 86 धूप से भरे सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार दस-दस शेकेल के । ये सभी धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने से बने थे 87 होमबलि के लिए सब मिलकर बारह बछड़े, बारह मेंढ़े और एक-एक साल के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने अन्नबलि समेत थे । बारह बकरे पापबलि के लिए थे । 88 मेलबलि के लिए चौबीस बैल, साठ मेंढ़े, साठ बकरे एक साल के साठ भेड़ी के बच्चे थे । वेदी को पवित्र किए जाने के बाद उसके संस्कार की भेंट यही थी । 89 मिलाप वाले तम्बू में याहवे से वार्तालाप करने मूसा जब दाखिल हुआ, तो उस ने प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से, जो साक्षीपत्र के बक्से के ऊपर था । परमेश्वर की आवाज़ सुनी । यह आवाज़ दोनों करूबों के बीच में से आयी थी।

8 1,2 याहवे ने मूसा से कहा, "हारून को बतलाओ, कि वह जब कभी दीपकों को जलाए, तब सभी सात दीपकों की रोशनी दीवट के सामने हो। 3 हारून ने इस आज्ञा के अनुसार ही किया 4 दीवट पाए से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया गया था। 5,6 फिर मूसा से याहवे ने कहा, "इस्राएलियों के बीच में से लेवियों को अलग लेना और शुध्द करना 7 उन पर पवित्र करने वाला पानी छिड़क देना। इनके मुण्डन किया जाएँ और कपड़े धोए जाएँ। 8 इसके बाद तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि सहित एक बछड़ा और पापबलि के लिए दूसरा बछड़ा लेना। 9 लेवियों को तुम मिलाप वाले तम्बू के पास पहुँचाना और इस्राएलियों की पूरी मण्डली को एकत्र कर लेना। 10 इसके बाद लेवियों को सामने लाकर इस्रालियों के हाथ पर रखा जाए 11 इस्राएलियों की ओर से हिलायी भेंट हारून अर्पण करे, ताकि फिर वे याहवे की सेवा करने वाले ठहरें। 12 इसके बाद उन बछड़ो के सिरो पर लेवीय अपने-अपने हाथों को रखेंगे। तुम लेवियों के लिए प्रायश्चित करने के लिए एक बछड़ा पापबलि के लिए और दूसरा होमबलि के लिए चढ़ाना। 13 हारून के सामने लेवियों और उन के बेटों को खड़ा करना। हिलाने की भेंट के लिए याहवे को अर्पण किया जाए। 14 इस तरह तुम उन्हें दूसरे लोगों से अलग करना। वे मेरे होंगे। 15 लेवियों को शुध्द करने के बाद हिलायी जाने वाली भेंट के लिए अर्पण के बाद मिलाप वाले तम्बू से सम्बन्धित सेवकाई करने के लिए भीतर आया करें। 16 इसलिए कि वे इस्राएलियों में से पूरी तरह मेरे लिए अलग किए गए हैं, मैंने एक-एक महिला के पहलौठे के बदले अपना कर लिया है। 17 पहिलौठे चाहे वे इन्सान के हों या जानवर के - वे मेरे हैं। जब मैने मिस्र देश के सभी पहलौठों को मार डाला था, उस समय इन को पवित्र ठहराया था। 18 सभी पहलौठों के बदले मैंने लेवियों को लिया है। 19 उनको लेकर मैंने हारून और उसके बेटों को इस्राएलियों में से दान, कर के दे दिया है। ऐसा इसलिए ताकि वे मिलाप वाले तम्बू में इस्राएलियों के लिए सेवकाई और प्रायश्चित करें। यह भी कि कहीं वे पवित्रस्थान के निकट आकर किसी जान लेवा समस्या में न फँस जाएँ। 20 मूसा, हारून और इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। 21 लेवियों ने अपने कपड़े धोए और खुद को गुनाह से भी धो डाला। हारून ने हिलायी हुयी भेंट के लिए अर्पण करने के साथ शुध्द करने के लिए प्रायश्चित किया। 22 लेवीय, हारून और उन के बेटों के साथ मिलाप वाले तम्बू में अपनी सेवाकाम निबटाने गए। 23 मूसा से याहवे ने कहा,"पच्चीस साल की उम्र से लेकर उस से अधिक उम्र वाले मिलाप वाले तम्बू के काम करने को अन्दर आएँ। 25 पचास साल की उम्र में उस सेवा को न करें। 26 लेकिन वे अपनी संगी-साथियों के रक्षा सम्बन्धी काम में हाथ बँटा सकते हैं।”

9 1 सीनै के जंगल में मिस्र की गुलामी से निकलने के दूसरे साल के पहले महीने में मूसा ने याहवे की आवाज़ सुनी 2 फ़सह के त्यौहार को इस्राएली निश्चित समय पर मनाया करें। 3 कहने का अर्थ है कि इसी महीने के चौदहवें दिन को सूरज डूबने के वक्त सभी विधियों-नियमों के अनुसार करें। 4 मूसा ने यह बात इस्राएलियों को बतला दी। 5 पहले महीने के चौदहवें दिन को सूर्य अस्त होने के समय सीनै के जंगल में उन लोगो ने फ़सह मनाया। मूसा व्दारा मिली आज्ञाओं के अनुसार इस्राएलियों ने किया भी 6,7 मृतक शरीर के व्दारा अशुध्द हो जाने के कारण कुछ लोग उस दिन फ़सह न मना पाए। उन्हों ने मूसा और हारून से कहा, "हम लोग अशुध्द तो हैं लेकिन इस्राएलियों के साथ ही क्यों फ़सह न मनाएँ ? 8 मूसा बोला, "थोड़ा ठहरो, मैं मालूम करता हूँ कि याहवे

इस बारे में क्या कहते हैं। 9,10 याहवे का कहना था, " चाहे कोई किसी मृतक शरीर के कारण अशुध्द हो या सफ़र में हो, वह फ़सह ज़रूर मनाए। 11 वे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को सूरज डूबने के समय मनाएँ। कुर्बान किए हुए जानवर के गोश्त को अखमीरी रोटी और कड़वी साग-पात के साथ खाएँ। 12 सुबह तक उस में से कुछ न छोड़ा जाए। पशु की हड्डी न तोड़ी जाए। सारी विधि अनुसार फ़सह मनाया जाए। 13 जो व्यक्ति शुध्द हो, यात्रा में न हो लेकिन फ़सह को न माने, उसे अपने बीच जीवित न रहने देना । उस इन्सान को चढ़ावा सही समय पर न ले आने के कारण अपराध का बोझ उठाना पड़ेगा। 14 यदि तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी फ़सह मनाना चाहे, तो वह भी सही तौर -तरीके को अपनाए। देशी हो या परदेशी, दोनों ही के लिए एक नियम हो। 15 जिस दिन साक्षी के तम्बू को लगाया गया था, उसी दिन उस पर बादल छा गया था। शाम के समय वही आग सा दिखता था। यह सुबह एक रहा करता था। 16 इस तरह दिन में बादल दिखता था और रात में आग दिखती थी। 17 तम्बू पर से बादल उठते ही इस्राएली चल पड़ते थे। जिस जगह बादल ठहरता, वहीं इस्राएली अपने तम्बू गाड़ लिया करते थे। 18 याहवे की सुनकर ही वे अपना रूकना और प्रस्थान कर रहे थे। 19 यदि बादल कहीं अधिक दिन रूकता तो वे भी रूकते थे 20 कभी-कभी थोड़े दिन तक रूकता तो थोड़े ही दिन वे रूका करते थे 21 कभी-कभी शाम से सुबह तक ही बादल, ठहरता था और सुबह उसके उठते ही वे भी चल पड़ते थे। 22 बादल दिन, महीना या साल जितना रूकता था, इस्राएली रूका करते थे। उसके उठते ही वे चल पड़ा करते थे। 23 इस तरह परमेश्वर और मूसा की आज्ञा में वे अपने दिन गुज़ार रहे थे।

10 1,2 मूसा से याहवे ने कहा,"गढ़कर चाँदी की दो तुरहियाँ बनाओ। लोगों को बुलाने और छावनी से चल देने की घोषणा के लिए इन्हें इस्तेमाल किया जाए। 3 उन दोनों के फूँके जाने पर सभी लोग मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर इकट्ठे हो जाएँ। 4 जब एक तुरही फूँकी जाए, तो मुख्य लोग जो हज़ारों के ऊपर निगरानी रखते हैं, तुम्हारे पास इकट्ठे हों। 5 जब तुम लोग साँस बान्धकर फूँको, तो पूर्व दिशा की छावनियाँ की ओर चल पड़ें। 6 जब दूसरी बार साँस बाँधकर फूँको, तब दक्षिण की छावनियों वाले चल पड़ें। 7 जब लोगों की सभा करनी है तब बिना साँस बाँधे फूँकना। 8 हारून के पुरोहित बेटे, तुरही फूँकने का काम करे। 9 जब तुम किसी परेशान करने वाले दुश्मन से लड़ाई करने निकलो, तब तुरहियों को सांस बाँधकर फूँकना। तब तुम्हारे परमेश्वर तुम्हें दुश्मन से बचाएँगे। 10 अपनी खुशी के दिन, निश्चित त्यौहारों और महीनों के शुरूआत में अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ इन तुरहियों को फूँकना। 11 दूसरे साल के दूसरे महीने के बीसवें दिन का बादल साक्षी के निवास पर से उठ गया। 12 तब इस्राएली सीनै जंगल से चले और बादल पारान नामक जंगल में ठहर गया। 13 मूसा को दी गयी परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार ही उनका प्रस्थान हुआ। 14 सब से पहले यहूदियों की छावनी का झंडा वहाँ से चल पड़ा। वे सभी दल बान्धकर चले । उन का सेनापति अम्मीनादाब का बेटा नहशोन था। 15 इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर का बेटा नतनेल था। 16 जबूलूनियों के गोत्र का हेलोन का बेटा एलीआब था 17 फिर निवारा को उतारने के बाद, गेर्शोनी और मरारी भी चल पड़े। 18 इसके बाद रूबेन की छावनी के झण्डे की रवानगी हुयी। उनका सेनापति शदेअर का बेटा एलीशूर था 19 शिमोनियों के कबीले के सेनापति सूरीशद्दै का बेटा एलीशूर था। 20 गादियों के गोत्र का सेनापति दूएल का बेटा एल्यासाप था। 21 कहाती लोग अलग की हुयी वस्तुएँ लेकर चल पड़े। उन के पहुँचने तक गेर्शोनियों और मरारियों ने निवारा को स्थिर कर दिया था। 22 तत्पश्चात एप्रेमी लोग निकल पड़े। उन के सेनापति का नाम एलीशामा था, जो अम्मीहूद का बेटा था। 23 मनश्शेइयों के कबीले का सेनापति पदासूर का बेटा गमलील था 24 बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का बेटा अबीदान था। 25 दानियों की छावनी सब छावनियों के पीछे थी, उसकी रवानगी भी हो गयी। उन के सेनापति अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआज़र था। 26 आशेर के गोत्र का सेनापति ओक्रान का बेटा यजीएल था। 27 नप्तालियों के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था। 28 इस तरह इस्राएली आगे बढ़ते गए। 29 मूसा ने अपने ससुर रूएल के बेटे होबाब से कहा, " जिस जगह के बारे में याहवे ने बताया है, उस जगह जाने को हम तैयार करते हैं। तुम भी हमारे साथ चलना। याहवे ने अपने लोगों के लिए भला करने को ही कहा है। हम भी तुम्हारे साथ भला ही करेंगे। 30 होबाब बोला,"मैं वापस अपने लोगों में जा रहा हूँ।" 31 मूसा ने कहा," जंगल में कहाँ तम्बू डालें, कहाँ नहीं - यह सब तुम्हें मालूम है, इसलिए हमें मत छोड़ो 32 यदि तुम हमारे साथ चलो, तो जो भलाई हम परमेश्वर कीचखेंगे, उसी के आधार पर तुम से व्यवहार करेंगे। 33 इस्राएली याहवे के पहाड़ से चल पड़े ।इन तीन दिनों के रास्ते में याहवे की वाचा का बक्सा उन के लिए आराम की जगह ढूँढता हुआ उन के आगे-आगे चलता रहा। 34 जब जब वे छावनी की जगह से चल पड़ते थे, तब दिन भर याहवे का बादल छाया रहता था। 35 जब जब बक्से के आगे बढ़ने का समय आ जाता था, मूसा के ये शब्द हुआ करते थे,"हे याहवे, आप उठें और आप के दुश्मन तित्तर-बित्तर हो

जाएँ।" 36 जब-जब वह ठहर जाता था, तब मूसा कहता था,
"हे याहवे, हज़ारों-हज़ार इस्त्राएलियों में लौटकर आ जाईए।"

11 1 इस्त्राएली लोग परमेश्वर के विरोध में शिकायत
करने लगे। याहवे को यह सब सुनते ही बहुत गुस्सा
आया। याहवे की आग उन के बीच में जल उठी और छावनी के
एक किनारे से भस्म करना चालू कर दिया। 2,3 मूसा के पास
आकर लोग चिल्लाने लगे। जब मूसा ने परमेश्वर से बिनती
की, तो आग बुझ गयी। इसलिए कि याहवे की आग वहाँ जली
थी, उस जगह का नाम तबेरा पड़ गया। 4 लोगों का झुण्ड जो
उन के साथ था, काम वासना में लीन हो गया। इस्त्राएली
रो-रोकर यह भी कहने लगे "हमें मांसाहारी खाना कौन
देगा?" 5 मिस्र में हम ने जो मछलियाँ खायीं, खीरे, खरबूज़े,
प्याज और लहसुन खाए वह सब कुछ याद है 6 यहाँ तो हमें
केवल मन्ना खाना पड़ रहा है और हम थक चुके हैं। 7 देखने में
मन्ना धनिये की तरह और मोती के रंग था। 8 बटोरने के बाद
लोग चक्की में पीसते थे या ओखली में कूटते थे। इसके बाद वे
इसे तसले में पकाते और फुलके बनाते थे। स्वाद में यह तेल में
बने हुए पुए की तरह था। 9 रात में ओस गिरने के साथ ही यह
गिरा करता था। 10 मूसा ने आदमी लोगों को अपने -अपने
तम्बू के पास रोते सुना। इस कारणवश मूसा को तो यह बात
बुरी लगी ही, परमेश्वर भी बहुत नाराज़ हो गए और उनका
क्रोध भड़क उठा। 11 तब मूसा ने याहवे से कहा "आप अपने
दास से ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे है ? आप ने इनकी ज़िम्मेंदारी
मेरे कन्धों पर क्यों डाल दी है ? मुझ पर आपकी कृपा क्यों
नहीं हुयी है ? 12 क्या इन लोगों को मैंने ही जन्म दिया है कि
जैसे एक पिता शिशु को अपनी गोद में लेकर चलता है, वैसे
ही मैं इन लोगों को सुरक्षित उस देश में पहुँचाऊँ, जिसे देने का
वायदा आप ने किया है। 13 मैं इतने लोगों के लिए मांसाहारी
खाने का प्रबन्ध कैसे कर सकता हूँ। ये लोग मुझ पर दबाव
डाल रहे हैं कि मैं उन्हें मांसाहारी भोजन दूँ। 14 इन लोगों की
ज़िम्मेंदारी लेना मेरी ताकत से बाहर है। इन का बोझ मैं नहीं
उठा सकता हूँ। 15 यदि प्रभु आप को मेरे साथ ऐसा ही करना
सही लगता है, तो मुझे मार डालिए ताकि मेरी हालत बुरी
न हो जाए 16 याहवे ने मूसा से कहा "इस्त्राएली बुज़ुगों में से
सत्तर ऐसे आदमी मेरे पास इकट्ठे करो, जिनको तुम जानते हो
। उन्हें मेरी प्रजा के बुज़ुगों में से होना है और मुखिया होना
चाहिए। उन्हें तुम मिलाप वाले तम्बू के पास लाना ताकि वे
तुम्हारे साथ यहीं खड़े हों। 17 वहीं पर मैं तुम से बातचीत
करूँगा। जो आत्मा तुम्हारे भीतर है, वही मैं उन लोगों में
डालूँगा। ये ही वे लोग हैं जो प्रजा का भार उठाएँगे। अकेले
तुम्हें यह ज़िम्मेंदारी उठानी न पड़ेगी। 18 लोगों से बोलो, कल
के लिए अपने आप को शुध्द (अलग) करें, तब तुम्हें मांसाहारी
भोजन मिलेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि मांस खाने के लिए
तुम बेचैन रहे और कुड़कुड़ाए। तुम ने यह भी कहा कि हमारा
जीवन मिस्त्र में अच्छा था। याहवे तुम्हे मांसाहारी खाना देंगे,
जिसे तुम खाना। 19 कुछ ही दिन नहीं लेकिन महीने भर तुम
खाते रहोगे। यहाँ तक कि उस से ऊब जाओगे, क्योंकि तुम
ने अपने साथ रहने वाले याहवे की कीमत नहीं समझा। तुम
यह शिकायत करते रहे कि प्रभु ने तुम्हें मिस्त्र से क्यों निकाला
। 21 फिर मूसा ने कहा " जिन लोगों के साथ मैं हूँ, उन में से
छै लाख सिपाही हैं और आप कह रहे हैं कि मैं उन्हें इतना
मांस दूँगा कि महीने भर खाते रहेंगे। 22 क्या उन्हें खिलाने के
लिए हमारे सारे मवेशी वध किए जाएँगे ? या क्या समुन्दर
की सारी मछलियाँ उन्हें खाने के लिए मिलेंगी ? 23 याहवे ने
मूसा से कहा "क्या याहवे का हाथ छोटा हो गया है ? अब तुम
अपनी आँखों से देखोगे कि मेरी कही बातें पूरी होती हैं या
नहीं ? 24 तब वह बाहर गया और इस्त्राएलियों को यह सब
कह सुनाया। उस ने बुज़ुर्गो में से सत्तर आदमियों को बुलाया
और तम्बू के चारों ओर खड़ा किया। 25 तब याहवे ने मूसा
से बात की और जो आत्मा उसके अन्दर था उस में से लेकर
सत्तर बुज़ुर्गों में समवा दिया। उस आत्मा के आते ही उन्हों
ने पहली और आखिरी बार नबूवत की 26 छावनी में जो दो
आदमी रह गए थे, उन के नाम थे - एलदाद और मेंदाद। उन
के ऊपर भी पवित्र आत्मा आया। जिनके नाम लिखे गए थे,
उन्हीं में से ये थे। वे तम्बू के पास नहीं गए थे लेकिन छावनी
ही में नबूवत करते रहे। 27 तब किसी ने जाकर मूसा को
समाचार दिया कि एलदाद और मेंदाद भी नबूवत कर रहे
हैं। 28 तब नून का बेटा यहोशू जो मूसा का सेवक और चुने
हुए बहादुर लोगों में से था, मूसा से कहा "मेरे मालिक मूसा
उन्हें रोको।" 29 मूसा तुरन्त बोल उठा, "क्या तुम मेरे कारण
जलते हो ? कितना अच्छा होता यदि याहवे की प्रजा के सभी
लोग नबी होते और याहवे अपना आत्मा उन सभी में डाल
देते।" इसके बाद बुज़ुर्गो सहित मूसा छावनी में चला गया।
31 तब याहवे ने एक ज़ोरदार आँधी भेजी और समुन्दर से बटेरें
उड़कर छावनी के चारों ओर इकट्ठा हो गयीं। एक दिन समय
लेने तक के रास्ते के दोनों ओर ज़मीन पर दो हाथ उँचाई तक
ढेर लग गया। 32 उस दिन रात लोग उठे रहे और दूसरे दिन
भी बटेरों को इकट्ठा करते रहे। कम से कम जो लोगों ने बटोरा
था, वह दस होमेर तक था। छावनी के बाहर उन्हों ने बटेरों
को फैला दिया था। 33 वे लोग जब उनको खा ही रहे थे, तो
परमेश्वर का गुस्सा भड़क गया और बुरी तरह उन्हें से मारा।
34 इसलिए कि जिन्होंने उस दिन कामुकता की थी, उन्हें वही

दफ़नाया गया, उस जगह का नाम किब्रोथत्तावा पड़ गय। वहाँ से निकलकर इस्राएली हसेरोत पहुँचे और वहीं रहने लगे।

12 1 कूश देश की एक लड़की से मूसा ने विवाह कर
लिया था। इसलिए मूसा की बहन मरियम और
भाई उसको बुरा-भला कहने लगे। 2 वे कहने लगे " क्या मूसा
ही से परमेश्वर ने बातचीत की है ? क्या, उस ने हम से भी
बातचीत नहीं की ?" ये सब कुड़कुड़ाना याहवे ने सुन लिया।
3 इस दुनिया में उस समय मूसा सब से अधिक नम्र इन्सान न
था। 4 इसलिए याहवे ने मूसा और हारून से कहा " मिलाप
वाले तम्बू के पास तुम तीनों आ जाओ।" उन तीनों ने ऐसा ही
किया। 5 तब याहवे ने वहाँ तम्बू के दरवाज़े के पास उपस्थित
होकर हारून और मरियम को बुलाया। उन्हों ने परमेश्वर की
बात सुनी थी। 6 फिर याहवे ने कहा, "मेरी सुनो" यदि तुम
में से कोई नबी है तो मैं याहवे दर्शन देकर या सपने में उस
से बातचीत करूँगा। 7 मेरा दास मूसा इस तरह का आदमी
नहीं है वह मेरे प्रति विश्वास योग्य है। 8 मैं छिपकर उस से
बातचीत नहीं करता हूँ, लेकिन आमने - सामने। वह मेरी
उपस्थिति में रहता है। इसलिए तुम उसकी बुराई करते हुए
क्यों नहीं लजाए? 9 तब परमेश्वर उन पर आग बबूला हो उठे
। 10 इसके बाद वह बादल तम्बू के ऊपर से गायब हो गया और
मरियम कोढ़ से बर्फ की तरह सफे़द हो गयी। हारून ने भी
देखा की मरियम की देह सफे़द हो गयी 11 तब हारून ने मूसा
से कहा " मेरे मालिक हम दोनों ने बड़ी बेवकूफी़ की और
अपराध किया है। हमें इसकी सज़ा से बचा लें। 12 मरियम की
भी अधगली सी देह ज्यों का त्यों कर दो। 13 इसलिए मूसा भी
यह कह कर गिड़गिड़ाने लगा, "हे परमेश्वर कृपया उसे अच्छा
कर दीजिए।" 14 याहवे ने मूसा से कहा, "यदि मरियम के
पिता ने उसके चेहरे पर थूका होता तो क्या छावनी से बाहर
उसे सात दिन तक रखा नहीं जाता ? इसलिए उसे सात दिन
तक छावनी के बार रखा जाए 15 इसलिए सात दिन तक
मरियम बाहर रही। जब तक मरियम वापस ली नहीं गयी,
तब तक लोग वहीं ठहरे रहे। 16 उसके बाद हसेरोत से चल
करके पारान नामक जंगल में उन्हों ने अपने डेरे डाले।

13 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा; 2 मैं इस्राएलियों को
कनान देश देने वाला हूँ। उसकी जासूसी करने के
लिए आदमियों को भेजो। ये जासूस अपने बापदादों (बुज़ुर्गो)
के प्रति कबीले के एक-एक प्रधान आदमी हों। 3 यह आदेश
याहवे से पाकर मूसा ने ऐसे पुरूषों को पारान नामक जंगल से
भेजा जो सब के सब इस्राएलियों के मुखिया थे। 4 उन के नाम
ये हैं : रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का बेटा शम्मू; 5 शिमोन
के गोत्र में से होरी का बेटा शापात 6 यहूदा के गोत्र में से
यपुन्ने का बेटा कालेब 7 इस्साकार के गोत्र में से योसेप का बेटा
यिगाल 8 एप्रैम के गोत्र में से नून का बेटा होशे 9 बिन्यामीन के
गोत्र में रापू का पुत्र पलती 10 जबूलून के गोत्र में से सोदी का
बेटा गद्दीएल; 11 यूसुफ़ वंशियों में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी
का पुत्र गद्दी 12 दान के गोत्र में से गमल्ली का बेटा अम्मीएल
13 आशेर के गोत्र में से मीकाएल का बेटा सतूर, 14 नप्ताली के
गोत्र में से वोप्सी का बेटा नहूबी; 15 गाद के गोत्र में से माकी
का पुत्र गूएल, 16 मूसा ने जिन आदमियों को जासूसी करने के
लिए भेजा था, उन के नाम ये ही थे नून के बेटे होशे का नाम
उस ने यहोशू रख दिया था। 17 मूसा ने उन्हें भेजते समय यह
निर्देश दिया था कि वे दक्षिण से जाएँ। 18 यह भी कि पहाड़ी
भाग में जाकर देश का जायज़ा लें कि कैसा है। साथ ही यह
कि वहाँ के लोग कमज़ोर हैं या ताकतवार, थोड़े है या बहुत
। 19 उस के बारे में भी जानकारी लें वह कैसा है - अच्छा या
बुरा। उनकी बस्तियाँ, किस तरह की हैं। उन के रहने के लिए
तम्बू है या इमारतें 20 उनकी ज़मीन उपजाऊ है या बंजर। पेड़
है या नहीं। तुम हिम्मत रखकर चलते चलो और उस देश की
उपज में से कुछ ले आना। यह समय (मौसम) अंगूर के पकने
का था। 21 इसलिए वे चल पड़े। सीन नामक जंगल से लेकर
रहोब तक, जो हमात के रास्ते में है पूरे देश का अच्छी तरह
से भेद लिया। 22 वे लोग दक्षिण की ओर से चले और हेब्रोन
तक गए। उस जग अहीमन रोशै और तहमै नामक अनाकवंशी
रहा करते थे। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात साल पहले
बसाया गया था। 23 तब वे ऐशकोल नामक नाले तक पहुँचे
वहाँ उन्हों ने एक डाली अंगूरों के गुच्छे सहित तोड़ ली। दो
आदमियों ने उसे एक लाठी पर लटकाया और चल पड़े उन्हों
ने अनार लिया और अंजीर भी अपने साथ ली, 24 इसलिए
कि इस्राएलियों ने वहाँ से अंगूर का गुच्छा तोड़ लिया था,
उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया। 25 चालीस
दिन (एक लम्बे समय) के बाद वे उस देश की जासूसी कर के
लौटे। 26 वे पारान नामक जंगल के कादेश नामक स्थान में
मूसा, हारून और इस्राएलियों के पाच पहुँचे। उन्हों ने सारा
समाचार उन्हें दिया। जो फल वे अपने साथ लाए, उन्होने वे
भी दिखाए। 27 मूसा से वे बोले, "जिस देश की जानकारी लेने
तुम ने हमें भेजा था, वह सचमुच में सम्पन्न देश है। वहाँ की
उपज का नमूना यह देखो। 28 लेकिन उस देश के निवासी
ताकतवार हैं उन के नगर भी किलों से घिरे हुए हैं और बड़े
हैं। हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा है। 29 दक्षिण
देश में अमालेकी बसे हुए हैं। पहाड़ी देश में हित्ती, यूबसी
और अमोरी रहा करते हैं। समुद्र के किनारे और यर्दन नदी
के किनारे कनानी रहते हैं। 30 मूसा के सामने इस्राएलियों को

खामोश करने के विचार से कालेब ने कहा,"तुरन्त हम चढ़ाई करके उस देश पर कब्ज़ा कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमारे पास ताकत है।" 31 कालेब के साथ जाने वाले लोगों ने कहा, "उन पर हमला करने के योग्य हम लोग नहीं है। वे हमसे अधिक ताकत रखते हैं।" 32 इस्त्राएलियों के सामने ही उन्हों ने उस देश की बुराई यह कह कर ही, "जिस देश का भेद लेने हम लोग गए थे, वह अपने लोगों को खा जाता है। उस देश के लोग जिन्हें हम ने देखा लम्बे-चौड़े हैं। 33 हम ने वहाँ नफ़ीली जाति वाले अनाकवंशियों को भी देखा। उन से अपनी तुलना करने पर हम टिड्डियों की तरह ही दिखते हैं।"

14 1 तब सभी लोग ऊँची आवाज़ से चिल्लाए और रोने लगे। 2 वे लोग मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने कर कहने लगे,"अच्छा होता यदि हम मिस्त्र या जंगल ही में मर जाते। 3 याहवे हमें उस देश में ले जाकर मरवा क्यों डालना माँगते हैं ? हमारी महिलाएँ और बच्चे लूट में चले जाएँगे। हमारे लिए क्या भला नहीं होगा कि हम वापस मिस्त्र चले जाएँ। 4 वे आपस में कहने लगे,"आओ हम किसी एक को चुनें कि हमारा अगुवा बन जाए और हम मिस्त्र वापस जाएँ। 5 तभी मूसा और हारून इस्त्रालिएयों के सामने मुँह के बल गिर पड़े 6 नून का बेटा यहोशू और यपुन्ने का बेटा कालेब जो उस दल में शामिल थे, जो जासूसी करने गए थे, अपने कपड़े फाड़कर 7 इस्त्राएलियों से कहने लगे," हम जिस देश की जासूसी करके आए हैं, वह बहुत ही बढ़िया देश है 8 यदि याहवे हमसे खुश हैं तो हमें उस सम्पन्न देश में पहुँचाएँगे और दे देंगे। 9 तुम याहवे के विरोध में बलवा मत करो, न ही उस देश के लोगों से डरो। वे लोग अब सुरक्षित नहीं हैं। वे हमारे आधीन हो जाएँगे। हमारे साथ याहवे हैं। उन से डरना नहीं। 10 तभी सब लोग फिर से चिल्लाए और उन पर पथराव करना चाहा। तब याहवे की रोशनी (उपस्थिति) मिलाप वाले तम्बू में सभी इस्त्राएलियों पर चमकी 11 तभी याहवे मूसा से बोले, " ये लोग कब तक मुझे आदर नहीं देंगे ? मरे किए हुए अचरज के कामों को देखने के बावजूद कब तक मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे ? 12 उन्हें मैं विपत्ति से मारूँगा। उन के अपने स्थान से उन्हें निकाल दूँगा। मैं तुम से एक ऐसा वंश निकालूँगा जो उन से बड़ा और ताकतवर होगा। 13 मूसा ने याहवे से कहा, "तब तो जो मिस्त्रियों जिनके बीच में से आप ने अपनी शक्ति दिखा कर उन को निकाल जाए थे, यह सुनेंगे। 14 इस देश में रहने वालों से कहेंगे, "हम ने तो यह सुना है कि याहवे इन के बीच में हैं और दिन में बादल के खम्भे और रात में आग के खम्भे में होकर चलते हैं" 15 इसलिए यदि आप इन लोगों को एक ही बार में मार डालें, तो जिन देशों ने आपकी बड़ाई सुनी है वे कहेंगे, 16 "याहवे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश पहुँचा न सका, इसलिए जंगल ही में उन्हें बर्बाद कर डाला" 17 इसलिए अब प्रभु की शक्ति की बड़ाई आपके कहने के अनुसार हो 18 कि याहवे गुस्सा प्रगट करने में धीरजवन्त और तरस से भरे हुए हैं। आप बुराई को माफ़ करने वाले हैं। आप अपराधी को निर्दोष नहीं ठहराएँगे। आप उन के पूर्वजों की दुष्टता की सज़ा (परिणाम) उन के बेटों, पोतों और परपोतों को भी भुगतने देते हैं। 19 अब इन लोगों की बुराई को अपनी दया के कारण जैसे मिस्त्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करते आए हैं, वैसे ही अभी भी कर दें। 20 याहवे का यह उत्तर था, "इसलिए कि तुम यह चाहते हो, मैं उन्हें माफ़ कर देता हूँ। 21 लेकिन सारी पृथ्वी याहवे परमेश्वर की महिमा से भर जाएगी। 22 मिस्त्र देश और जंगल में जिन लोगों ने मेरी महिमा (कार्यो के व्दारा) देखी और मेरे किए गए अद्भुत को देखने के बावजूद दस बार मुझो परखा और मेरी न सुनी 23 इसलिए उन के पुरखों से मैंने जिस देश को देने का वायदा किया था, वे न देख पाएँगे। कहने का मतलब यह है कि मेरी बेइज़्ज़ती करने वाले उस देश को न देख सकेंगे। 24 लेकिन कालेब के भीतर एक अलग ही आत्मा (रवैया) है और उस ने पूरी तरह से मेरी बातों को माना है। जिस देश का भेद लेने वह गया था, उसे मैं वापस वहाँ ले जाऊँगा। उसका वंश भी उस देश का अधिकारी होगा। 25 अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहा करते है इसलिए कल तुम घूम कर चल पड़ो। तुम लोग लाल समुन्दर के रास्ते से होकर जाना 26 फिर याहवे ने मूसा और हारून से कहा, 27 ये बुरे लोग मेरे विरोध में कुड़कुड़ाते रहते हैं, मैं कब तक सहूँ ? 28 इसलिए उन्हें बताओ कि याहवे का कहना यह है कि जो कुछ उन्हों ने कहा है, उसी के अनुसार तुम सब से बर्ताव करेंगो। 29 तुम्हारी लाशें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी। बीस साल और उस से अधिक के सभी लोग जो शिकायत करते रहे हैं 30 उन में से यपुन्ने के बेटे कालेब और नून के बेटे यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न प्रवेश कर पाएगा जिसका वचन मैंने दिया था। 31 लेकिन तुम्हारी सन्तान जिसके बारे में तुम ने सोचा था कि वह लूट में चली जाएगी, उसे मैं प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचा दूँगा वे लोग उस देश का आनन्द उठाएँगे", जिसकी कीमत तुम ने नहीं जानी। 32 लेकिन तुम्हारी लाशें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी। 33 जब तक तुम्हारी लाशें जंगल में गल न जाएँ तब तक (चालीस वर्ष या एक लम्बी अवधि) तुम्हारी औलाद तुम्हारे व्यभिचार का परिणाम भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। 34 जितने दिन (चालीस) तुम उस देश की जासूसी कर रहे थे, उस ने ही वर्ष (चालीस वर्ष) तुम ही अपने गलत कामों का

परिणाम भुगतोगे। तब तुम सीख जाओगे, कि परमेश्वर के खिलाफ़ जाना कितना खतरनाक है।

15 1,2 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "इस्राएलियों को बताओ कि जब वे अपनी प्रतिज्ञा की हुयी, भूमि पर पहुँचें 3 और मेरे लिये होमबलि, मेलबलि या कुछ और चढ़ाएँ, चाहे वह खास मन्नत पूरी करने या स्वेच्छाबलि के बारे में हो, यह सब गाय-बैल या भेड़-बकरी का हो सकता है 4 उस बलि के संग भेड़ के बच्चे के पीछे चौथाई हीन तेल से सना एपा क दो दसवाँ हिस्सा मैदा अन्नबलि के रूप में चढ़ाया जाए 7 उसका अर्थ याहवे को सन्तुष्ट करने वाला तिहाई हीन दाखमधु देना 8 जब तुम परमेश्वर को होमबलि या किसी खास मन्नत पूरी करने के लिए कुर्बानी या मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाओ, 9 तब बछड़ा चढ़ाने वाला उसके साथ आधा हीन तेल से सना एपा का तीन दसवाँ भाग मैदा अन्नबलि की तरह चढ़ाए, 10 उसका अर्घ आधा हीन दखमधु चढ़ाए। उस से याहवे को सन्तुष्टि होगी। 11 एक-एक बछड़े, मेंढ़े या भेड़ के बच्चे या बकरी के बच्चे का इसी तरह से चढ़ाना चाहिए 12 तुम्हारे कुर्बानी वाले जानवरों की गिनती के अनुसार हर एक के साथ ऐसा ही हो 13 देशी लोग परमेश्वर को खुश करने वाला हवन चढ़ाते समय इसी तरीके से काम करें 14 तुम्हारे साथ रहने वाला परदेशी, या कोई और इस तरह का हवन चढ़ाना चाहे, तो जैसे तुम करो, वैसे ही वह करे 15 तुम्हारे साथ रहने वाले लोगों और तुम्हारे लिए समान तौर तरीका है। 16 नियम-व्यवस्था सभी समान होंगे। 17,18 याहवे ने मूसा से यह भी कहा, "इस्राएलियों को मेरा यह आदेश दो कि नए देश में तुम पहुँचने वाले हो 19 वहाँ की फ़सल का उपयोग करो और याहवे को उठायी हुयी भेंट चढ़ाते रहे 20 अपने पहले गूंधे आटे की एक पपड़ी उठायी हुयी भेंट करके याहवे के लिए चढ़ायी जाए जिस तरह से तुम खलिहान के भीतर से उठायी भेंट चढाओ, वैसे ही उसे उठाया भी करना। 21 पीढ़ी दर पीढ़ी अपने गुंधे आटे में से याहवे को उठाने वाली भेंट देते रहना 22 इस सभी आदेशों में से जिन्हें याहवे ने मूसा को दिया है, किसी के खिलाफ़ मत जाना 23 जिस दिन से परमेश्वर आज्ञाएँ देने लगे, और बाद में दी गयी 24 उसमें यदि अनजाने में किया अपराध जिसे लोग नहीं जानते हैं, एक बछड़ा और अन्नबलि और उसका अर्घ चढ़ाए साथ ही में पापबलि करके बकरा चढ़ाए 25 फिर पुरोहित सभी लोगों के लिए क्षमा माँगे और क्षमा मिलेगी 26 इसलिए अनजाने में जो भी गुनाह करे - चाहे देशी हो या परदेशी वह माफ़ी पाएगा 27 यदि कोई भूले से अपराध कर डालता है, तो एक साल की एक बकरी पापबलि के रूप में चढ़ाए 28 पुरोहित उसके लिए प्रायश्चित्त करता है 29 भूल से कोई भी कुछ क्यों न करे, सब के लिए एक ही कानून है। 30 लेकिन यदि कोई ढिठाई से कुछ गुनाह करे, वह याहवे की बेइज्ज़ती करने वाला होगा। उसे जान से मार डालना पड़ेगा। 31 जो याहवे को तुच्छ जानता है, उनकी बात को टालता हे, उसे भी बर्बाद किया जाना चाहिए। 32 जब इस्राएली मरूस्थल में थे उस दिन एक आदमी विश्राम दिन के दिन लकड़ी बीनता हुआ पाया गया। 33 उसे मूसा और हारून के पास लाया गया 34 उसे हवालात में रखा गया, क्योंकि उसके साथ क्या बर्ताव किया जाना चाहिए, यह स्पष्ट नहीं था 35 याहवे के मूसा को दिए गए निर्देश के अनुसार उस पत्थरवाह करके मारा जाना चाहिए था। 36 लोगों ने ऐसा कर भी डाला 37,38 याहवे का एक और आदेश मूसा को मिला वह यह था कि लोग अपने कपड़ों के छोर पर झालर लगाएँ। एक छोर की झालर पर नीला फीता भी लगाएँ। 39 इसका मकसद यह है कि उसे देखते ही याहवे की आज्ञाएँ याद आ जाए। तुम उनकी मानना तुम अपने मन और आँखों के वश में आकर व्यभिचार न करना, जैसे करते आए हो। 40 उनकी सभी आज्ञाओं को याद करके उन्हें पूरा करो। अपने परमेश्वर के लिए पवित्र बनो। 41 मैं तुम्हारा याहवे परमेश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्र की दासता में से निकाल लाया था।

16 1 कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता और यिसहार का बेटा था। वह एलीआब के बेटे दातान अबीराम और पेलेत के बेटे ओन, 2 इन तीनों ने रूबेनियों से मिलकर ढाई सौ मुखिया जो सभा में आदरणीय स्थान रखते थे, उन्हें अपने साथ लिया 3 वे मूसा और हारून की खिलाफ़त करने में लग गए। वे बोले " अब हम तुम्हारी नहीं सुनते। सभी लोग पवित्र हैं। याहवे हम सब के बीच में हैं। तुम अपने को बड़ा क्यों समझ रहे हो? 4 यह सुनते ही मूसा मुँह के बल गिर गया। 5 वह कोरह और उसके साथ के लोगों से बोला प्रातःकाल परमेश्वर सबूत दे देंगे, कि पवित्र कौन है 6 हे कोरह, "तुम अपने और साथ के लोगों के धूपदान ठीक करो। 7 तुम उस में आग रखकर कल याहवे के सामने धूप देना। जिस किसी को याहवे चुन लेंगे वही पवित्र ठहरेगा।" 8,9 मूसा लेवियों से भी बोला, "हे लेवियों क्या यह मामूली बात है कि अपने निवास की सेवा के लिए परमेश्वर ने तुम्हे बुलाया है ? 10 इतना ही नहीं, तुम्हारे लेवी भाईयों को भी यह अवसर दिया है, फिर भी तुम पुरोहित पद के भूखे हो 11 इसीलिए तुम ने सभी लोगों को याहवे के विरोध बलवा करने के लिए उकसाया है। हारून पर तुम क्यों खिसिया रहे हो 12 इसके बाद एलीआब के बेटे दातान और अबीराम को मूसा नें बुलवाया। उन्हों ने आने से इन्कार कर दिया 13 उन्हों

ने कहा," यह एक मामूली बात नहीं कि तुम हमें सम्पन्न देश से निकाल कर जंगल में ले आए हो ताकि हम सभी यही मर जाएँ। तुम हम पर अधिकार जताते आ रहे हो। 14 तुम हमें एक सम्पन्न देश नहीं पहुँचा पाए हो। हम न ही खेतों और बगीचों के अधिकारी हुए हैं। क्या इसी तरह तुम लोगों की आँख में धूल झोंकते रहोगो ? 15 मूसा ने गुस्से में कहा," उन लोगों की भेंट की तरफ़ निगाह मत कीजिए। मैंने इन से कभी भी एक पशु नहीं लिया न ही किसी का नुकसान किया है।" 16 फिर कोरह से मूसा बोल उठा,"तुम अपने झुण्ड के साथ कल हारून के साथ याहवे के सामने हाज़िर होना 17 तुम अपने -अपने धूपदानों से धूप देना, जिनकी गिनती ढाई सौ होगी विशेष कर तुम और हारून 18 इसलिए उन्हों ने अपना-अपना धूपदान लेकर वैसा ही किया 19 कोरह अपने झुण्ड के साथ मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। तभी याहवे की रोशनी दिखायी दी। 20,21 याहवे मूसा और हारून से बोले, "इन लोगों के बीच में से हट जाओ ताकि मैं उन्हें भस्म कर डालूँ।" 22 उन्हों ने मुँह के बाल गिरते हुए कहा, "हे परमेश्वर आप जो सभी के परमेश्वर हैं, क्या एक व्यक्ति की गलती के कारण आपका गुस्सा सब लोगों पर आए 23,24 याहवे ने मूसा से कहा, मण्डली के लोगों को बताओ कि कोरह दातान और अबीराम के तम्बुओं से दूर चले जाएँ। 25 तब मूसा उठ कर दातान और अबीराम के पास गया। साथ ही साथ इस्त्राएली बुज़ुर्ग लोग उसके पीछे-पीछे गए 26 वह मण्डली के लोगों से बोला," तुम लोग उन बुरे लोगों के निवास के पास से हट जाओ। यहाँ तक कि उनकी किसी चीज़ को मत छूना। कहीं ऐसा न हो कि उन के साथ तुम्हें भी नुकसान उठाना पड़े। 27 यह सुनते ही वे लोग कोरह दातान और अबीराम के डेरों के पास से दूर चले गए। लेकिन दातान और अबीराम निकलकर अपनी पत्नियों और बच्चों सहित दरवाज़े पर आ खड़े हुए। 28 तब मूसा बोला,"अब तुम्हें मालूम पड़ जाएगा कि मुझे प्रभु ने चुना है। यह भी कि मैं मनमानी नहीं करता हूँ 29 यदि उन लोगों की मौत और लोगों की तरह हो और उनको मिलने वाली सज़ा दूसरों की तरह हो, तब यह साबित हो जाएगा कि मुझे याहवे ने नहीं भेजा है। 30 लेकिन यदि परमेश्वर याहवे अपनी अद्‌भुत शक्ति को दिखा दें, और सभी बलवा करने वाले तथा उनका सब कुछ ज़मीन अपना मुँह खोलकर उन्हें निगल ले, तब समझ लेना कि इन लोगों ने याहवे की बेइज्ज़ती की है। 31 वह इतना कह ही रहा था, कि ज़मीन नीचे से फट गयी। 32 ज़मीन ने कोरह और उसके सभी साथ के लोगों और उन के समान तथा सम्पत्ति को निगल लिया। 33 उनका पूरा घरबार ज़िन्दा मृत्युलोक में जा पड़ा। 34 आस-पास में खड़े इस्त्राएली यह सब देखकर चिल्लाते हुए भागे ताकि उन के साथ भी वैसा न हो। 35 उसी समय परमेश्वर ने आग भेजकर ढाई सौ धूप चढ़ाने वालों को जला डाला 36,37 इसके बाद याहवे ने मूसा को निर्देष दिया कि वह हारून पुरोहित के बेटे एलीआज़ार से कहे कि वह धूपदानों को आग में से उठाए और आग के अंगारों को बिखरा दे। 38 जिन लोगों ने बलवा किया और नाश हो गए, उन के धूपदानों के पत्तर पीट दिए जाँए ताकि वेदी के मढ़ने में वह काम आए। 39 इसलिए एलीआज़ार पुरोहित ने उन पीतल के धूपदानों को पिटवा दिया। 40 यह इसलिए किया गया ताकि इस्त्राएली जान लें कि आने वाली पीढ़ियों में धूप चढ़ाने के लिए, हारून के वंश के अलावा कोई हिम्मत न करे, नहीं तो कोरह और उसके साथी के समान वे भी सज़ा पाएँगे। 41 दूसरे दिन इस्त्राएली लोग मूसा और हारून पर बड़बड़ाने लगे कि हारून और मूसा के कारण लोग मारे गए। 42 जब वे सभी वहाँ इकट्ठा हो रहे थे, मिलाप वाले तम्बू के पास उन्हों ने छाए हुए बादल और परमेश्वर के प्रकाश को देखा 43 फ़िर मूसा और हारून तम्बू के सामने आए 44,45 मूस से याहवे बोले, "तुम इन लोगों के बीच से निकल जाओ, ताकि मैं इन्हें बर्बाद कर डालूँ। यह सुन वे भूमि पर मुँह के बल गिर पड़े 46 मूसा हारून से बोला, "धूपदान को लेकर, वेदी की आग रखकर उस पर धूप डालो। जल्दी से जाओ मण्डली के लिए परमेश्वर से माफ़ी माँग लो। याहवे आग बबूला हैं और मरी फैलने लगी है।" 47 यह सुन उस ने वैसा ही किया। तभी मरी भी रूक गयी 48 जब वह ज़िन्दों और मरे हुओं के बीच खड़ा हुआ, महामारी रूक गयी 49 जो लोग कोरह के बलवा में शामिल थे और मर गए थे, उसके अलावा चौदह हज़ार सात सौ इस बार मरे। 50 मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर मूसा के पास हारून जैसे ही लौटे महामारी रूक गयी।

17 1,2 तब याहवे मूसा से बोले, "इस्त्राएलियों के पूर्वजों के अनुसार उन के सारे प्रधानों के पास से एक छड़ी लो। बारह छड़ियों में से एक-एक पर एक-एक के मूल पुरूष का नाम लिख लो। 3 जो लेवियों की छड़ी है उस पर हारून का नाम लिखना। इस्त्रालियों के पूर्वजों के परिवारों (घरानों) के एक-एक मुख्य पुरूष की एक-एक छड़ी रहेगी। 4 इन छड़ियों को मिलाप वाले तम्बू में साक्षीपत्र के सामने रख देना। 5 मेरे चुने हुए पुरूष का सबूत यह होगा कि उस छड़ी में कलियाँ निकल आएँगी। इस से इस्त्राएलियों का बुड़बुड़ाना भी खतम हो जाएगा। 6 इसलिए ये बातें मूसा ने उन्हें बतायीं और वैसा ही किया गया 7 छड़ियों को भी साक्षीपत्र के तम्बू में रखा 8 दूसरे दिन जब मूसा वहाँ गया तो पाया कि हारून की छड़ी में कलियाँ निकलीं, फूल खिले और पके बादाम भी हैं। 9 मूसा ने वे छड़ियाँ उठायीं और इस्त्राएलियों के सामने

रखीं । सभी ने अपनी-अपनी छड़ पहचान ली 10 फिर मूसा ने याहवे की आवाज़ सुनी,"हारून की छड़ को साक्षीपत्र के सामने रखना । यह बलवा करने वालों के लिए एक चिन्ह होगा ताकि वे भविष्य में कभी वे कुड़कुडाएँ नहीं और नाश न हों" 11 मूसा ने ऐसा किया भी। 12 तब इस्त्राएली आकर मूसा से कहने लगे, " देखो हम सब नाश होने पर हैं । 13 जो कोई याहवे के निवास के पास जाता है वह मर जाता है । क्या हम सभी मर जाएँगे ?"

18 1 फिर हारून से परमेश्वर ने कहा कि पवित्र स्थान के अधर्म का बोझ तुम पर और तुम्हारे बेटों और पिता के परिवार पर होगा । तुम्हारे पुरोहितों के अपराध की सज़ा भी तुम्हारे बेटों पर आएगी । 2 लेवी के गोत्र को अपने साथ लाना । वे तुम्हारी सेवा करें । लेकिन साक्षीपत्र के तम्बू के सामने तुम और तुम्हारे बेटे आया करें 3 जो कुछ तुम्हारे सुपुर्द किया गया है, वे लोग उसकी देख-रेख पवित्र स्थान के बर्तनों के और वेदी के पास मत आना। कहीं ऐसा न हो कि वे लोग और तुम मर जाओ 4 वे तुम से मिल जाएँ और मिलाप वाले तम्बू की सभी सेवकाई की चीज़ों की रक्षा करें । लेकिन जो तुम्हारे कुल का नहीं है वह पास न आए। 5 पवित्र स्थान और वेदी की रखवाली तुम खुद करना, जिससे इस्त्राएलियों पर दण्ड न आए । 6 मैंने लेवियों को पहले ही से अलग किया है । वे लोग मिलाप वाले तम्बू की सेवा के लिए तुम को और याहवे को सोंपे गए हैं । 7 वेदी और बीच वाले पर्दे के अन्दर की बातों की सेवा के लिए तुम और तुम्हारे बेटे अपने पुरोहितपन की रक्षा करें । सेवा तुम ही करना । मैं तुम्हें पुरोहितपन की सेवा दान करता हूँ । जो लोग तुम्हारे कुल के नहीं है, यदि वे पास आएँ तो मार डाले जाएँ। 8 याहवे हारून से बोले, "मैं तुम्हें उठायी भेंट को तुम्हारा हिस्सा देने के लिए देता हूँ । कहने का अर्थ है इस्त्राएलियों की पवित्र की हुयी वस्तुएँ, जितनी भी हों, उन्हें तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हक करके ठहराता हूँ । 9जो पवित्र चीज़ें आग में होम न की जाएँ, वे तुम्हारी रहें। मतलब यह कि इस्त्राएलियों के सभी चढ़ावों में से उन के सभी अन्नबलि, पापबलि और दोषबलि जो वे मुझे देंगे वह तुम्हारे और तुम्हारे बेटों के लिए अलग (पवित्र) ठहरें। 10 तुम उन्हें खास समझ कर खाया करना। और हर एक पुरुष खाए।11 ये चीज़ें भी तम्हारी हों। इस्त्राएलियों से मिलने वाली हिलाने की भेंटें हमेशा के लिये तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा होंगे। तुम्हारे परिवार में अलग किये हुए लोग ही उनको खाएँ।12 बढ़िया तेल, दाखमधु और अनाज वे पहले फल के रूप में लाऐंगे। वह सब तुम्हारा होगा। 13 उनके देश की हर तरह की पहली उपज, जो वे भेंट की तरह लाएँ, वह सब तुम्हारी होगी। सभी ऊन सब को नहीं खाएँ। 14 इस्त्राएल में जो भी अर्पित किया जाए, वह सब तुम्हारा हो।15 मनुष्यों और जानवरों में जो भी पहलौठा होगा, वह याहवे के लिये अलग ठहरे और वह सब तुम्हारे लिये हो। इन्सान का पहलौठा कीमत लेकर आज़ाद कर देना।।अशुद्ध जानवर के पहलौठे को भी दाम लेकर मुक्त कर देना।16 जिन्हें कीमत देकर छोड़ना है, जब वे एक महीने के हों,तब ठहराए मूल्य के हिसाब से अर्थात पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल के मुताबिक चाँदी के पाँच शेकेल लेकर उन्हें आज़ाद कर देना।17 लेकिन गाय, भेड़ और बकरी के पहलौठों को कीमत लेकर मुक्त न करना। वे परमेश्वर के लिये अलग किये गये हैं।उनके खून को वेदी पर छिड़कना और चर्बी को अग्निबलि कर के जला देना । वह याहवे के लिये सुखदायक खुशबू हो।18 लेकिन उसका मांस तुम्हारे लिये हो। हिलाई हुई छाती और दाहिनी जाँघ भी तुम्हारी हो।19 अलग की हुई जितनी भेंट इस्त्राएली लाएँ, वह सब मैं तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिये सदाकाल का हिस्सा ठहराता हूँ।यह तुम्हारे और तुम्हारे वंश के लिये याहवे के सामने नमक की सदा ठहरने वाली वाचा है।20 फिर याहवे ने हारून से कहा,"उन के देश में तुम्हारी कोई मीरास न होगी और र न ही उनके बीच कोई हिस्सा।इस्त्राएलियों के बीच तुम्हारा हिस्सा और मीरास मैं ही हूँ। 21मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी लोग करते हैं, उसके बदले मैं आया हुआ सारा दसवाँ हिस्सा उनके लिये ठहराता हूँ।22 आने वाले समयों में इस्त्राएलियों को इस तम्बू के पास कभी नहीं आना चाहिये। इस से वे मौत के कौर बन सकते हैं।23 लेकिन लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें। उन्हें ही उनकी बुराई का बोझ उठाना चाहिये। उनकी निजी सम्पत्ति न होगी ।24 जो एस्त्राएली दसवाँ हिस्सा लाएँगे, वही उनका हिस्सा होगा।,25फिर याहवे ने मूसा से कहा, 26 " लेवी भी मिले हुए दान में से दसवाँ भाग अलग करें। 27 उनकी भेंट उनके फ़ायदे के लिये इस तरह की होगी जैसी कि अनाज और अँगूर का रस।। इस तरह से लेवियों की भेंट हारून के लिये होगी। 29 जितनी चीजे़ं तुम्हें मिलती हैं , उनका बढ़िया से बढ़िया हिस्सा याहवे का होना चाहिये। 30मूसा से परमेश्वर ने कहा," तुम लेवियों को बतलाओ कि वे लोग जो अच्छी- अच्छी चीजों को देंगे, वह सब खलिहान के अनाज और रस-कुन्ड के रस की तरह होगा।31सभी जगहों पर तुम उसे अपने परिवार के साथ खा सकोगे। परमेश्वर से भेंट करने वाली जगह पर तुम्हारी की जाने वाली मेहनत का यह मेहनताना होगा।32 उत्तम हिस्सा देने से तुम दोषी भी न ठहरोगे। लेकिन इस्त्राएलियों की अलग की हुई वस्तुओं को तुम न छूना, ताकि दण्ड से बचे रहो।

19 1,2 याहवे की आवाज़ मूसा और हारून तक पहुँची
"आदेश यह है कि तुम इस्राएलियों को बताओ,
कि मेरे पास एक लाल निर्दोष बछिया लाएँ। उसे निर्दोष
होना चाहिए। उस से कभी काम न लिया गया हो। 3 फिर
एलीआज़र पुरोहित उसे छावनी के बाहर ले जाए, जहाँ उसे
कोई कुर्बान करे। 4 फिर एलीआजर अपनी उंगली से खून
लेकर मिलाप वाले तम्बू के सामने सात बार छिड़क दे। 5 फिर
कोई उस बछिया की खाल, मांस, खून और गोबर सहित उसके
सामने जलाए। 6 पुरोहित देवदास की लकड़ी, जूफा़ और
लाल रंग का कपड़ा ले और आग में, जिस में बछिया जलती
हो, डाल दे। 7 तब वह अपने कपड़े धोकर नहाए और छावनी
में आए लेकिन शाम तक अशुध्द रहो 8 जो इन्सान उसे जलाए
वह पानी से अपने कपड़े धोए, नहाए और शाम तक अशुध्द
रहे। 9 फिर कोई शुध्द पुरूष उस बछिया की राख बटोरकर
छावनी के बाहर किसी साफ़ा जगह में रख दे। वह राख
इस्राएलियों के लिए अशुध्दता से छुड़ाने वाले पानी के लिए
हो - वह पापबलि है। 10 जो व्यक्ति बछिया की राख को
बटोरेगा, वह शाम तक अशुध्द ठहरेगा। उसे भी अपने कपड़े
धोने पड़ेंगे। 11 मृत शरीर को छूने वाला सात दिन तक अशुध्द
रहे। 12 वह तीसरे दिन पानी से पाप छुड़ाकर पवित्र हो जाए
और सातवें दिन शुध्द कहलाए। 13 जो मृतक देह को छूकर
पाप छुड़वाकर अपने आप को पवित्र न करे, वह याहवे के
निवासस्थान को अशुध्द करेगा। उसे नष्ट किया जाना चाहिए
। क्योंकि शुध्द करने वाला पानी उस पर छिड़का नहीं गया
था, इसलिए उसे अशुध्द ही समझा जा चाहिए 14 यदि कोई
डेरे ही में मर जाए तो उस डेरे में रहने वाले सात दिन तक
अशुध्द ठहरेंगे। 15 वहाँ का हर एक खुला बर्तन भी अशुध्द
ठहरेगा। 16 तलवार से मारे गए या अपनी मौत से मरे व्यक्ति,
या इन्सान की हड्डी छूने वाले और कब्र को छूने वाला सात
दिन तक अशुध्द कहलाए 17 अशुध्द इन्सान के लिए जलाए
गए पापबलि की राख में से कुछ लेकर बर्तन में डालकर उस
पर सोते का पानी उण्डेले। 18 फिर एक जन जूफा़ लेकर उस
पानी में डुबाकर पानी को उस डेरे पर और जितने बर्तन तथा
लोग उस में हो, उन पर छिड़के। मारे हुए व्यक्ति, हड्डी के या
अपनी मौत से मरे या कब्र के छूने वाले पर छिड़के। 19 वह
शुध्द हुआ आदमी तीसरे और सातवें दिन उस अशुध्द आदमी
पर छिड़के। उसके पास से वह उसे सातवें दिन छुड़ाए और
पवित्र करे। इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोए, नहाए और
सन्ध्या तक शुध्द रहे। 20 जो व्यक्ति अशुध्द होकर अपने पाप
छुड़ाकर स्वयं को पवित्र न कराए, वह याहवे की पवित्र जगह
को अशुध्द करने वाला होगा। उसे सभी लोगों के बीच से नष्ट
किया जाए। क्योंकि उस पर अशुध्दता से छुड़ाने वाला पानी
न डाला गया, इसलिए वह अशुध्द ही होगा। 21 जो अशुध्दता
से छुड़ाने वाला पानी छिड़के, वह अपने कपड़ों को धोए।
जिस व्यक्ति से अशुध्दता से छुड़ाने वाला पानी छू जाए, वह
भी शाम तक अशुध्द रहे। 22 वह इन्सान जिस को भी छूएगा,
वह भी अपवित्र हो जाएगा। जो प्राणी उस चीज़ को छूएगा
वह भी सन्ध्या तक अशुध्द हो।"

20 1 पूरी मण्डली पहले महीने में सीनै पहाड़ पर आयी
। वे सभी कादेश नामक जगह पर रहने लगे। वही
मरियम का देहान्त हो गया 2 उस स्थान पर पानी की कमी
होने के कारण, सब लोग मूसा और हारून की खिलाफ़त
के लिए इकट्ठे हुए 3 उन्हों ने बुड़बुड़ाते हुए कहा, " अच्छा
यह होता कि हम भी उसी समय मर जाते, जब हमारे दूसरे
भाई-बन्धु मर गए 4 क्या तुम हम सभी को इसलिए ले आए
हो, कि हम लोग अपने मवेशी समेत मर जाएँ। 5 मिस्र से
निकालकर तुम हमें इस बुरी तरह क्यों ले आए हो यहाँ बीज,
अंजीर, अंगूर, अनार आदि फल और पीने के लिए पानी नहीं
है 6 तब मूसा और हारून मिलाप वाले के दरवाज़े पर अपने
मुँह के बल गिर पड़े। वहीं परमेश्वर का तेज उन्हें दिखायी
दिया। 7,8 मूसा से याहवे बोले, "लाठी लाकर हारून सहित
लोगों को एकत्र करके उन के सामने ही उस चट्टान से बातें
करो। वहाँ से पानी निकलेगा। वे लोग खुद पीएँगे और अपने
जानवरों का पिला सकेंगे। 9 मूसा ने ऐसा ही किया 10 मूसा
बोला," हे बलवईयो क्या तुम्हारे लिए इस चट्टान से पानी
निकालें? 11 मूसा ने चट्टान पर लाठी दो बार मारी। उस में से
पानी निकल पड़ा और सब की ज़रूरत पूरी हुयी। 12 याहवे
का वचन मूसा और हारून तक पहुँचा, "क्योंकि तुम ने मुझ
पर भरोसा नहीं रखा। इस्राएलियों की निगाहों में मुझे
इज़्ज़त नहीं दी, इसलिए तुम इन लोगों को प्रतिज्ञा किए
हुए देश में नहीं पहुँचा सकोगे। 13 इसलिए कि इस्राएलियों
ने वहाँ परमेश्वर से झगड़ा किया था, सोते का नाम मरीबा
पड़ गया 14 मूसा ने संदेश के साथ एदोम के राजा के पास दूत
भेजे,"हमारे दुखें को तुम जानते हो। 15 मिस्त्रियों लोगों ने
हमारे साथ और हमारे पूर्वजों के साथ बुरा बर्ताव किया था
16 हमारे गिड़गिड़ाने को सुनकर परमेश्वर ने दूत को भेजकर
हमें आज़ादी दी। अभी हम सीमावर्ती क्षेत्र कादेश में हैं।
17 हमें अपने देश में से गुज़रने दो। किसी खेत या अंगूर के
बगीचे को खराब न करेंगे। कुओं का पानी इस्तेमाल न करेंगे।
सड़क-सड़क चलते हुए सीधे निकल जाएँगे।" 18 एदोमियों का
उसे संदेश यह मिला, "नहीं तुम्हें इजाज़त नहीं है।" 19 फिर
इस्राएली बोले, " हम सीधे निकल जाएँगे, यदि हमारे जानवर
पानी पीएँ भी तो हम उसकी कीमत चुकाएँगे। 20 एदोम

बड़ी फौ़ज लेकर इस्राएलियों का मुकाबला करने निकल आया 21 अनुमति नहीं मिलने से ये लोग दूसरी ओर मुड़ गए 22 इस्राएली वहाँ से चलकर होर नामक पहाड़ तक आए। 23,24 मूसा और हारून से वहाँ याहवे ने कहा, "हारून का निधन हो जाएगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा सोते पर मेरी बात न मानी। हारून वायदा किए हुए देश को न देख सकेगा। 25 तुम हारून और उसके बेटे एलीआज़र को होर पहाड़ पर ले जाओ। 26 उसके कपड़े उतार कर उसके बेटे एलीआज़ार को पहनाओ। 27 इस आदेश को मानकर मूसा ने किया। वे पूरे झुण्ड के साथ होर पहाड़ पर चढ़ गए। 28 मूसा ने हारून के कपड़े उतार कर उसके बेटे एलीआज़ार को पहना दिया। वहीं शिखर पर हारून की मौत हो गयी। 29 यह देखकर इस्राएली तीस दिन तक रोते रहे।

21 1 अराद के कनानी राजा ने सुना कि जिस रास्ते से जासूस आए थे, उसी रास्ते से इस्राएली आ रहे है। इसलिए उस ने उन से युध्द किया और तमाम लोगों को गुलाम बना ले गया 2 फिर इस्राएलियों ने यह मन्नत मानी कि यदि परमेश्वर उन लोगों को उन के अधिकार में कर दे तो वे उन के नगरों को बर्बाद कर डालेंगे। 3 परमेश्वर ने ऐसा कर भी दिया। इसलिए उन्हों ने उन के नगरों सहित उन्हें मार डाला। उस जगह का नाम होर्मा रख दिया गया 4 फिर उन लोगों ने होर पहाड़ से निकल कर लाल समुद्र का रास्ता लिया। लोगों का मन मुश्किल रास्ते की वजह से घबरा गया। 5 वे परमेश्वर के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे और मूसा से बोले, "हम सभी को मारने के लिए तुम हमें यहाँ ले आए हो। यहाँ हमारे खाने का कोई ठिकाना नहीं है। 6 इसलिए याहवे ने उन के बीच ज़हर वाले साँप भेजे। साँपों के डसने से बहुत से मर गए 7 तब लोग मूसा से कहने लगे, "हम ने याहवे और तुम्हारे खिलाफ़ बोला है। हमारे लिए बिनती करो, कि ये साँप यहाँ से चले जाएँ।" 8 याहवे ने मूसा से कहा, "एक बहुत जहरीले साँप की प्रतिमा बनाकर खम्भे पर लटकाओ। तभी साँप से डसे लोग बच सकेंगे।" 9 इसलिए मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाया और खम्भे पर लटका दिया। साँप के काटे हुए जितने लोगों ने उसकी ओर दृष्टि की, वे बच गए 10 फिर इस्राएलियों ने वहाँ से निकलकर ओबोत में पड़ाव किया। 11 फिर आबोत से वे निकले और अबारीम नामक डीहो में पड़ाव डाला। यह मोआब के सामने के जंगल में पूर्व की ओर है। 12 वहाँ से निकलकर वे जेरेद नामक नाले में रूक गए। 13 वहाँ से निकलकर उन्हों ने अर्नोन नदी के दूसरी ओर डेरे खड़े किए। 14 इसलिए याहवे के संग्राम नामक किताब में इस तरह लिखा है, सूपा में बाहेब, और आर्नोन की घाटी, 15 उन घाटियों की ढलान जो आर नगर की तरफ़ है और जो मोआब की सरहद पर है 16 वहाँ से वे जो निकले, तो बैर तक पहुँचे। यहीं पर वह कुआँ है, जिसके बारे में परमेश्वर ने वायदा किया था कि उस से वह पानी देंगे। 17 तभी इस्राएलियों ने यह गीत गाया था।" है कुएँ उमेंड़ा उस कुएँ के बारे में गाओ" 18 जिसको गर्वनरों ने खोदा और इस्राएल के अमीरों ने अपने सोंटों और लाठियों से खोद लिया फिर वे जंगल से मत्ताना को 19 और मत्ताना से नहलीएल और नहलीएम से बामोत को 20 बामोत से निकलकर उस घाटी तक जो मोआब के मैदान में है और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है, पहुँच गए 21 इस्राएलियों ने एमोरियों के बादशाह सीहोन के पास खबर भेजी 22 तुम हम लोगों को अपने क्षेत्र में से गुज़रने दो। हम किसी खेत या बगीचे को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे कुएँ का इस्तेमाल नहीं करेंगे और सड़क-सड़क निकल जाएँगे 23 फिर भी सीहोन ने इज़ाजत नहीं दी, इसके विपरीत उस ने मुकाबला करने के लिए सेना का सहारा लिया 24 इस्राएलियों ने उन पर जीत हासिल कर ली 25 इसलिए इस्राएलियों ने एमोरियों के सभी नगरों को हथिया लिया वहाँ तथा हेशबोन के आस-पास के इलाकों में रहने लगे 26 एमोरियों के राजा का शहर हेशबोन ही था। 27 ऐस कहा जाता है "हेशबोन में आओ सीहोन का नगर बसे और मजबूत किया जाए 28 क्योंकि हेशबोन से आग अर्थात् सीहोन नगर से लपट निकली जिससे मोआ देश का आर नगर और अर्नोन के ऊँचे स्थानों के मालिक भस्म हो गए। 29 हे मोआब, तुम पर हाय! कमोश देवता के लोग बर्बाद हुए उस ने अपने बेटों को भगेड़ू और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी बना दिया। 30 हम ने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन और दीबोन तक बर्बाद हो गया हम ने नोपह और मेंदबा तक भी उजाड़ दिया है। 31 इस तरह इस्राएली वहाँ बस गए 32 याजेर नगर का भेद लेने के लिए मूसा ने भेदिए भेजे और उन के गाँव जप्त कर लिए। उस ने वहाँ के वासियों को बाहर खदेड़ दिया 33 इस के बाद वे मुड़कर बाशान के रास्ते से निकले। वहीं बाशान के राजा ने उन से मुकाबला किया। 34 याहवे का वचन मूसा तक पहुँचा, "तुम उस से डरना नहीं, क्योंकि मैं उसको, उसकी सेवा को और उसके देश को तुम्हारे वश में कर दूँगा। जैसा व्यवहार तुम ने एमोरियों के राजा के साथ किया था, वैसा ही इसके साथ भी करना।" 35 तब उन्हों ने उसे, उसके बेटों और सारे देशवासियों को एक-एक कर मार डाला

22 1 फिर इस्राएली वहाँ से निकले तथा यरीहो के निकट यरदन नदी के इस पार मोआब के अराबा में तम्बू गाड़े। 2 इस्राएल ने एमोरियों के साथ क्या -क्या किया

था, यह सब सिप्पोर के बेटे बालाक ने देखा था 3 इस्राएलियों
की बड़ी संख्या देखकर मोआब डर गया था। 4 तब मोआबियों
ने मिद्यानी बुज़ुर्गो से कहा, " ये लोग हमें इस तरह चट कर
जाएँगे, जैसे बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है। इन
दिनों में सिप्पोर का बेटा बालाक मोआब का बादशाह था
5 उस ने बिलाम के पास संदेशवाहक भेजकर बुलवाया, "मिस्र
से बड़ी संख्या में लोग आकर मेरे सामने ही बस गए हैं। 6 वे
लोग मुझ से ज़्यादा ताकतवर हैं। यदि तुम आकर शाप दो,
तो हमारी उन के ऊपर जीत मुमकिन है। मुझे मालूम है कि
जिन्हें तुम आशीर्वाद देते हो उसका भला होता है। जिसे तुम
शाप देते हो, उसका बुरा होता है 7 इसके बाद मोआबी और
मिद्यानी बुरे भविष्य बताने के लिए पैसा लेकर बिलाम के
यहाँ गए जहाँ उन्हों ने बालाक की बातें कह सुनायी 8 उस ने
उन्हें नेवता दिया कि वे उस रात वहीं टिक जाएँ। यह भी
कि जो वचन परमेश्वर से मिलेगा, उसी के मुताबिक वह
जवाब देगा। इस पर मोआब के हाकिम विलाम के यहाँ ठहर
गए। 9 तब बिलाम से परमेश्वर ने पूछा,"ये लोग जो तुम्हारे
यहाँ हैं, कौन हैं ? 10 बिलाम ने परमेश्वर को उत्तर दिया,
"सिप्पोर के बेटे मोआब के राजा बालाक ने मुझे यह संदेश
भेजा है 11 कि जो लोग मिस्र से निकलकर आए हैं, उन से
ज़मीन भर गयी है। इसलिए तुम आओ और उन्हें शाप दो।
शायद मैं इन्हें खदेड़ पाऊँगा। 12 परमेश्वर बिलाम से बोले,
" तुम न ही इन लोगों के साथ जाओ और न ही शाप दो।
वे लोग पहले ही आशीषित हैं। 13 सुबह उठते ही बिलाम ने
बालाक के हाकिमों से कहा,"तुम वापस अपने देश को चले
जाओ, क्योंकि याहवे मुझे तुम्हारे साथ चलने की इज़ाजत
नहीं दे रहे हैं। 14 तब मोआबी गवर्नरों (हाकिमों) ने जाकर
बालाक से कहा, "बिलाम ने हमारे साथ आने से इन्कार कर
दिया है। 15 इसलिए बालाक ने फिर से और हाकिम भेजे। ये
लोग और अधिक प्रभावशाली होने के साथ साथ संख्या में भी
ज़्यादा थे। 16 बिलाम के पास आकर वे लोग बोले, " सिप्पोर
का बेटा बालाक कहता है,मेरे पास ज़रूर आओ, 17 मैं तुम्हें
सम्मान दूँगा। जो कुछ तुम कहो, मैं करूँगा, इसलिए आकर
इन्हें शाप दो।" 18 बिलाम ने बालाक के सेवको को कहा,
"बालाक चाहे मुझे सोने चाँदी को बहुतायत से दे, फिर भी
परमेश्वर की आज्ञा के खिलाफ़ नहीं जा सकता। 19 इसलिए
तुम लोग आज रात यही टिको, कि मैं फिर से मालूम करूँ कि
परमेश्वर क्या कह रहे हैं। 20 रात में बिलाम के पास आकर
परमेश्वर ने कहा, "जो लोग तुम्हें बुलाने आए है, उन के संग
ज़रूर जाओ, लेकिन मेरे कहने के अनुसार ही करना। 21 सुबह
बिलाम उठा और तैयारी कर मोआबी गवर्नरों के साथ चल
पड़ा 22 परमेश्वर यह देख आग बबूला हो गए और उनका दूत
उसका विरोध करने अड़ गया। अपनी गदही पर वह सवार
था और उसके साथ उसके दो नौकर भी थे। 23 याहवे का दूत
उस गदही को तलवार लिए हुए दिखायी पड़ा। डर कर गदही
ने रास्ता छोड़ दिया और खेत में भाग गयी। तभी बिलाम
ने गदही की पिटायी कर दी। 24 तब याहवे का दूत अंगूर
के बगीचे के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बगीचे की
दीवार थी खड़ा हो गया 25 याहवे के दूत को देखकर गदही
दीवार से ऐसी सट गयी, कि बिलाम का पैर दीवार से दब
गया और उस ने फिर उसे मारा 26 इसके बाद ही याहवे का
दूत आगे बढ़ा और एक सकरी जगह पर खड़ा हो गया। वहाँ
बाएँ - दाएँ जाने की संभावना नहीं थी। 27 याहवे के दूत को
वहाँ देखकर गदही बैठ गयी। तभी बिलाम आगबबूला हो
गया। उस ने उस पर लाठी उठायी 28 याहवे ने गदही को
बोलने के योग्य किया और बिलाम से बोली, " मैंने तुम्हारा
क्या बिगाड़ा है कि तुम मुझे मार रहे हो ? 29 बिलाम गदही
से बोला, " क्योंकि तुम ठीक से काम नहीं कर रहे हो। यदि
मेरे पास तलवार होती, तो मैं तुम्हें मार डालता। 30 गदही ने
कहा, "क्या तुम भूल गए हो कि तुम एक लम्बे अरसे से मेरी
सवारी करते आ रहे हो, क्या, मैंने आज तक गलत किया है ?
उस ने कहा, "कभी नहीं।" 31 तब याहवे ने बिलाम की आँखे
खोल दीं और वह देख सका कि याहवे का दूत हाथ में तलवार
लिए खड़ा है। वही बिलाम मुँह के बल गिर गया 32 याहवे का
दूत उस से बोला, " अपनी गदही को तुने तीन बार क्यों मारा
है ? तुम्हारा सामना करने मैं खुद आया हूँ। तुम्हारी चाल
सीधी नहीं है। 33 मुझे देखकर यह गदही तीन बार रास्ते से
हट गयी। यदि यह ऐसा नहीं करती तो तुम अब तक मर गए
होते 34 फिर बिलाम याहवे के दूत से बोला, " मैंने आज्ञा नहीं
मानी, मुझे नहीं मालूम था कि मेरा मुकाबला करने आप रास्ते
में थे। इसलिए यदि आप राज़ी नहीं है, तो मैं लौट जाता हूँ।
35 याहवे के दूत ने कहा, "इन आदमियों के साथ तुम चले तो
जाओ, लेकिन कहना वही, जो मैं तुम्हें बताऊँगा। "तब उस ने
ऐसा ही किया। 36 बिलाम के आने की खबर सुनकर बालाक
उस से भेंट करने आया 37 बालाक बिलाम से बोला, " बड़ी
उम्मीद से मैंने तुम्हें बुलाया था। तुम तुरन्त क्यों नहीं चले
आए थे ? क्या मेरी औकात नहीं कि तुम्हें धन-दौलत से भर
दूँ ? 38 बिलाम बालाक से कहने लगा, "देखों मैं आ तो गया
हूँ लेकिन मैं बोलूँगा वही जो परमेश्वर मुझे इज़ाज़त देंगे।"
39 तब वे दोनों किर्यथूसोत तक आए। 40 बालाक ने बैल और
भेड़-बकरियों को कुर्बान किया। वह सब साथ के गर्वनरों को
भेजा गया। 41 सुबह सवेरे बालाक बिलाम को बाल देवता के
पूजा स्थानों पर ले गया। वहीं से वे लोग सभी इस्राएलियों
को देख सकते थे।

23 1 बिलाम, बालाक से बोला, "यहाँ मेरे लिए सात
वेदियाँ बनवाओ । इसी जगह पर सात बछड़े और
सात मेंढ़े तैयार करो । 2 बालाक ने वैसा ही किया । दोनों ने
एक-एक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया 3 बिलाम
ने बालाक से कहा, "तुम अपने होमबलि के पास ही रहो, मैं
जा रहा हूँ । याहवे मुझ से भेंट करने आ सकते हैं । वह मुझे जो
कुछ बताएँ मैं तुम्हें बताऊँगा । 4 परमेश्वर ने बिलाम से जब
भेंट की तब बिलाम बोला, "मैंने सात वेदी बनाकर हर एक पर
एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया है ।" 5 याहवे ने उसके मुँह
में एक बात डाली और कहा कि वह जाकर बालाक को बताए
। 6 जब वह उसके पास लौटा तो देखा कि वह सभी मोआबी
गवर्नरों सहित होमबलि के पास ही खड़ा है । 7 तब बिलाम
कहने लगा, "बालाक ने मुझे आराम अर्थात् मोआब के राजा
ने मुझे पूर्व के पर्वतों से बुलवाया 'आओ, मेरे लिए याकूब को
शाप दो, आओ इस्त्राएल को धमकाओ । 8 लेकिन मैं उन लोगों
को शाप कैसे दूँ, जिन्हें परमेश्वर ने नहीं दिया । जिन्हे याहवे
ने धमकी नहीं दी, उनहें मैं कैसे दूँ ? 9 चट्टानों की चोटी पर से
वे मुझे दिखायी दिए हैं, वे ऐसे लोग हैं, जो अकेले बसे हैं । वे
दूसरे राष्ट्रों से अलग गिने जाएँगे । 10 याकूब के मिट्टी के कणों
को गिन कौन सकता है या इस्त्राएल की चौथाई की गिनती
कौन कर सकता है ? अच्छा होता यदि मेरी मौत भले लोगों
की तरह होती 11 तब बालाक बिलाम से बोला, "यह तुम ने
मेरे साथ क्या किया है ? मैंने तुम्हें अपने दुश्मनों को शाप देने
के लिए बुलवाया था, लेकिन तुम तो आशीर्वाद ही दे रहे हो
।" 12 क्या याहवे की कही हुयी बात मैं न मानूँ। 13 बालाक उस
से बोला, " मेरे साथ दूसरी जगह चलो, जहाँ से वे दिखायी
देंगे । तुम सभी को नहीं लेकिन बाहर वालों को देख सकोगे,
उन्हीं को शाप देना 14 फिर वह उसे सोपीम नामक मैदान में
पिसगा के कोने पर ले गया । वहाँ सात वेदियाँ बनाकर हर
एक पर बछड़ा और मेंढ़ा कुर्बान किया 15 बिलाम बालाक से
बोला,"अपने होमबलि के पास यहीं खड़े रहो । मैं परमेश्वर
से मुलाकात करने जा रहा हूँ । 16 याहवे की भेंट बिलाम से
हुयी और उन्हों ने उसके मुँह में एक बात डाली और कहा, "
वापस बालाक के पास जाओ ।" 17 वह वापस लौट भी गया ।
वहाँ जाकर उस ने देखा कि वह मोआबी गवर्नरों सहित अपने
होमबलि के निकट खड़ा है। बालाक ने सवाल किया कि याहवे
क्या चाहते हैं । 18 बिलाम कहने लगा, "हे बालाक सिप्पोर
के बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दो । 19 परमेश्वर इन्सान नहीं
हैं कि झूठी बात करें और अपनी इच्छा को बदल डालें । जो
कुछ वह कह चुके हैं, क्या करेंगे नहीं ? क्या अपनी कही बात
को वह पूरा नहीं करेंगे ? 20 मुझे तो आदेश मिला है कि मैं
आशीर्वाद दूँ । इसलिए कि वह भलाई की बातों को ठहरा चुके
हैं, उसे बदला नहीं जा सकता 21 परमेश्वर ने इस्त्राएल में
अनर्थ नहीं देखा है और न ही बेइन्साफ़ी देखी है। उन लोगों
के साथ परमेश्वर हैं । 22 मिस्त्र की गुलामी से परमेश्वर ही
उनको बाहर लाए हैं । उन लोगों की शक्ति बनैले साड़ की
तरह है 23 इन लोगों के खिलाफ़ कोई मन्त्र काम न आएगा ।
उन के बारे में भावी कहने से भी काम नहीं चलेगा । याकूब
और इस्त्राएल के बारे में अब ऐसा कहा जाएगा, कि परमेश्वर
ने क्या ही अजीब काम किया है । 24 सुनो, वह झुण्ड शेरनी
की तरह खड़ा होगा, जब तक वह शिकार को खा न ले और
मारे हुओ के खून को पी न ले तब तक लौटेगा नहीं ।" 25 तब
बालाक बिलाम से बोला, न ही उन्हें शाप देना और न आशीष
। 26 बिलाम बालाक से बोला, "क्या मैंने तुम से नहीं कहा था
कि जो कुछ याहवे मुझे से कहेंगे, वही मैं करूंगा 27 बालाक,
बिलाम से बोला, "चलो मैं तुम्हें एक और जगह पर ले चलता
हूँ हो सकता है कि वहाँ से शाप देना परमेश्वर को मंजूर हो।"
28 तब बालाक बिलाम को पोर के सिरे पर ले गया । वहाँ से
यशीमोन देश दिखता है । 29 बिलाम ने बालाक से कहा, "
यहाँ पर मेरे लिए सात वेदियाँ बनाओ । सात बछड़े और सात
मेंढ़े भी तैयार रखना ।" 30 जैसा बिलाम ने कहा था, बालाक
ने हर एक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेंढ़ा रखा ।

24 1 याहवे के इस उद्देश को, कि इस्त्राएल का भला
हो बिलाम पहले की तरह शकुन जानने नहीं गया ।
लेकिन उस ने अपना चेहरा जंगल की ओर कर लिया 2 बिलाम
ने वहाँ से इस्त्राएलियों के तमाम गोत्रों को रहते हुए देखा ।
परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। 3 वह कहने लगा, बोर
का बेटा बिलाम का यह कहना है, जिस आदमी की आँखों में
ज्योति नहीं थी वह कहता है, 4 परमेश्वर की बातों का सुनने
वाला जो मुँह के बल पड़े हुए खुली आँखों से सर्वशक्तिमान
को देख पाता है, वह कहता है कि 5 हे याकूब तुम्हारे तम्बू,
और हे इस्त्राएल, तुम्हारे रहने की जगह कितनी खुश कर देने
वाली हैं। 6 वे घाटियों और नदी के किनारे लगे बगीचों की
तरह फैली हुइ हैं । ये याहवे के लगाए हुए अगर के वृक्ष और
पानी के किनारे के देवरारू की तरह हैं । 7 उसके घड़ों से पानी
उमण्डता रहेगा । उसका बीज तमाम पानी से भरे खेतों में
पड़ेगा, उसका राजा अगाग से बड़ा होगा, और उसका राज्य
बढ़ता जाएगा। 8 मिस्त्र से परमेश्वर ही उसे निकाल ले आ
रहे हैं, उसकी ताकत बनैले साँड़ की तरह है वह द्रोही देशों
के लोगों को खा जाएगा। उनकी हड्डियों को वह टुकड़े- टुकड़े
करेगा और उन्हें अपने तीरों से भेदेगा। 9 वह डरा हुआ है और
शेर या शेरनी की तरह लेट गया है, उसे छेड़ कौन सकता
है ? जो काई तुम्हे आशीर्वाद दें, उसका भी भला हो, जो

तुम्हे शाप दे, वह खुद शापित हो ।" 10 फिर बालाक बिलाम पर आग बबूला हो गया । हाथ पर हाथ पटक कर उस ने बिलाम से कहा, "अपने दुश्मनों को शाप देने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया था लेकिन तीन बार तुम ने आशीष के शब्द कहे हैं ।" 11 इसलिए तुम अब यहाँ से भाग लो । मैं तुम्हें काफी कुछ देने वाला था । लेकिन अब यह संभव नहीं है ।" 12 बिलाम बालाक से बोला," जो दूत तुम ने मेरे पास भेजे थे, क्या मैंने उन्हें बता नहीं दिया था ? 13 कि चाहे बालाक अपने चाँदी - सोने से भरा घर भी दे दे, फिर भी परमेश्वर के आदेश के विरोध में अपने मन से भला- बुरा कुछ भी नहीं कह सकता। 14 "सुनो, अपने लोगों के पास मैं वापस जा रहा हूँ । लेकिन मैं पहले से यह बता देना चाहता हूँ, कि आखिर के दिनों में तुम्हारी प्रजा के साथ वे लोग कैसे पेश आएँगे। 15 फिर वह अपनी गहरी बातें कहने लगा, "बोर का बेटा बिलाम यह कहता हैः जिस आदमी की आँखे बन्द थीं उसी के ये शब्द हैं, 16 परमेश्वर की बातों को सुनने वाला और परम प्रधान के ज्ञान का अनुभवी, जो दण्डवत् की मुद्रा में पड़ा हुआ परमेश्वर से दर्शन पाता है, वह यह कह रहा है 17 उन्हें मैं देखूँगा ज़रूर, लेकिन अभी नहीं, मैं उन्हें टकटकी लगाकर देखूँगा तो सही, लेकिन पास से नहीं । एक तारा याकूब में से निकलेगा और इस्त्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा, वह मोआब की सरहद को बर्बाद कर डालेगा, और दंगा करने वालों को गिरा डालेगा । 18 तब एदोम और सेईर भी, जो उसके दुश्मन हैं, दोनों उसके वश में हो जाएँगे और इस्त्राएल बहादुरी दिखाएगा । 19 याकूब ही में से एक राजा निकलेगा जो शासन करेगा, और नगर में से बचे हुओं को भी बर्बाद कर डालेगा । 20 फिर अमालेक पर अपनी दृष्टि करके उस ने अपने गंभीर वचन दिए, "देशों में अमालेकी श्रेष्ठ तो थे, लेकिन अन्त में वे नाश हो जाएँगे ।" 21 केनियों पर निगाह डाल कर वह बोलने लगा, "तुम्हारे रहने की जगह बहुत मज़बूत है और बसेरा चट्टान पर है 22 फिर भी केन उजड़ जाएगा। अन्त में अश्शूर तुम्हें बन्दी बनाकर ले आएगा" 23 उस ने फिर से अपनी कठिन बातें कहनी शुरू कीं," हाय, जब परमेश्वर ऐसा करेंगे, तब ज़िन्दा कौन बच पाएगा ? 24 फिर भी कित्तियों के पास से जहाज वाले आकर अश्शूर को और एबेर को भी पीड़ा देंगे।" 25 तब बिलाम चल पड़ा और अपनी जगह पर लौट गया। तभी बालाक भी रवाना हो गया ।

25 1 शित्तीम में इस्त्राएली रहा करते थे। वे लोग मोआबी लड़कियों से सम्भोग करने लगे । 2 उन महिलाओं ने अपने देवताओं के यज्ञ में उन्हें निमन्त्रण दिया । वहाँ जाकर खाने के बाद देवताओं को पूजने लगे । 3 इस तरह से इस्त्राएली बालपोर देवता की आराधना करने लगे । इसलिए याहवे का गुस्सा भड़क उठा। 4 मूसा से याहवे ने कहा, "सब प्रधानों को पकड़कर याहवे के लिए धूप में लटका दो, जिससे मेरा गुस्सा ठण्डा हो जाए । मूसा इस्त्राएलियों से बोला, जो जो आदमी बालपोर की पूजा में शामिल हो गए हैं, उन्हें मार डालो ।" 6 जब इस्त्राएली मिलाप वाले तम्बू के पास रोना -धोना मचाए हुए थे, तभी एक एक इस्त्राएली सभी लोगों के देखते देखते एक मिद्यानी महिला को अपने साथ अपने भाईयों के पास लाया । 7 यह देखते ही एलीआज़ार का बेटा पीनहास, जो हारून का पोता था, हाथ में बरछी लिए हुए उठा । 8,9 उस इस्त्राएली पुरूष के तम्बू में जाने के बाद वह भी अन्दर गया । उस महिला और पुरूष दोनों ही के पेट में बरछी भेद दी । इस तरह इस्त्राएलियों में जो मरी फैल चुकी थ, रूक गयी । उस दिन की मरी से चौबीस हज़ार लोग मर गए । 10,11 तब मूसा से याहवे ने कहा, "हारून पुरोहित का पोता एलीआज़ार का बेटा पीनहास, जिसे इस्त्राएलियों के बीच मेरी तरह ईर्ष्या हुयी, 12 इसलिए तुम बता दो कि मैं उस से शान्ति की वाचा बान्धता हूँ; 13 वह उसके लिए और बाद में उसके वंश के लिए, हमेशा के पुरोहित पद की वाचा होगी । ऐसा इसलिए क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिए जलन हुयी और उस ने इस्त्राएलियों के लिए प्रायश्चित्त किया।" 14 मिद्यानी महिला के साथ मारे जाने वाले इस्त्राएली का नाम जिम्री था वह साल का बेटा और शिमोनियों में से अपने पूर्वजों के घराने का मुखिया था। 15 मारी गयी मिद्यानी महिला का नाम कोजबी था। उसके पिता का नाम सूर था। वह मिद्यानियों में एक प्रधान था। 16,17 याहवे ने मूसा से कहा," मिद्यानियों को सताओ और मारो। 18 क्योंकि पोर के बारे और कोजबी के बारे में वे तुम को धोखा देकर सताते हैं।" कोजबी एक मिद्यानी मुखिया की बेटी थी। पोर के सम्बन्ध में मरी के दिन वह मारी गयी थी ।

26 1,2 याहवे ने मूसा, और एलीआज़ार जो हारून का बेटा था से कहा, "इस्त्राएलियों में जो बीस साल या उस से अधिक उम्र के हैं या ज़्यादा के हैं और युध्द में लड़ सकते हैं, उन के पितरों के घरानों के अनुसार उन सब की गिनती करो ।" 3 इसलिए मूसा और एलीआज़ार पुरोहित ने यरीहो के पास यर्दन नदी के किनारे मोआब में सब को समझा◌ाया, 4 "बीस साल और उस से अधिक उम्र के लोगों को गिन लो ।" इसी तरह का आदेश मिस्त्र से निकलते समय मूसा को दिया गया था । 5 इस्त्राएल के ज्येष्ठ पुत्र के बेटों के नाम ये थे हनोक, जिससे हनोकियों के कुल की शुरूआत हुयी । पहलू से पहलूईयों का आरम्भ हुआ। 6 हेस्त्रोन से हेस्त्रोनी बढ़ने लगे । कर्मी से कर्मियों की पीढ़ी चली 7 रूबेन के कुल से तैंतालीस हज़ार सात

सौ तीस आदमी थे । 8 पल्लू का बेटा एलीआब था। 9 एलीआब
के बेटे नमूएल, दातान और अबीराम थे । यह दातान और
अबीराम वही हैं जो सभा के सदस्य थे । कोरह के लोगों के
बलवे के समय ये शामिल थे । 10 उस समय ढाई सौ लोग
भस्म हो गए थे और ज़मीन में समा गए थे । कोरह भी इन
के साथ था, 11 लेकिन कोरह के बेटे बच गए थे । 12 शिमोन
के बेटे जिन से उन के कुलों की शुरुआत हुयी ये थे : अर्थात्
नमूएल, जिससे नमूएल का कुल चला । यमिन से यामीनियों
की शुरूआत हुयी थी । 13 जेरह से जेरहियों का कुल चला।
शाऊल से शाऊल का कुल। 14 शिमोन वाले कुल यही थे, इमें
से बाईस हज़ार दौ सो पुरूष गिने गए । 15 गाद के बेटे जिन से
उन के कुल निकले वे ये थे : अर्थात् सपोन, जिस से सपोनियों
के कुल की शुरूआत हुयी । हाग्गी से हाग्गियों की पीढ़ी चली
और ओजनी से ओजनियों का 16 एरी से एरियों का कुल
17 अरेली से अरेलियों का 18 गाद के वंश के सब मिलाकर ये थे
: इन में से साढ़े चालीस हज़ार पुरूष गिने गए थे। 19 यहूदा के
एर और ओनान नाम से बेटे थे, लेकिन वे कनान में ही मर गए
थे। 20 यहूदा के जिन बेटों से उन के कुलों का प्रारम्भ हुआ वे ये
थे; अर्थात् शेला, जिससे शोली निकले; पेरेस से पेरेसी निकले
और जेरह से जेरही। 21 पेरेस के बेटे ये थे : हेस्त्रोन, जिससे
हेस्त्रोनी हुए,हामूल से हामूली। 22 ये यहूदियों के कुल थे; इन
में से साढ़े छिहत्तर हज़ार पुरूष गिने गए। 23 इस्साकार के पुत्र
जिन से उन के कुलों की शुरूआत हुयी ये थे : अर्थात् तोला,
जिन से तोली हुए और पुव्वा जिस से पुव्वियों का कुल चला
। 24 याशूब से याशूबियों का कुल चलता रहा । शिम्रोन से
शिम्रोनी । 25 इस्साकारियों के ये ही कुल थे : इनमें से चौंसठ
हज़ार तीन सौ आदमी थे । 26 जबूलून के बेटे जिन से उन के
कुल शुरू हुए वे ये थे : सेरेद से सेरेदी, एलीन से एलोनी और
यहलेले से यहलेली। 27 जबूलूनीयों में से साढ़े साठ हज़ार जन
थे । 28 यूसुफ़ के पुत्र से मनश्शे और एप्रैम थे। 29 मनश्शे के
पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिससे मकारियों का कुल हुआ ।
माकीर से गिलात पैदा हुआ; उसे से गिलादी हुए। 30 गिलाद
के बेटे ये थे; अर्थात् ईएज़ेर-जिससे ईएज़ेरियों का कुल शुरू
हुआ। 31 हेलेक से हेलेकी, अमहिलाएल से अस्त्राएली, शेकेम
से शेकेम, शमीदा से शमीदी 32 हेपेर से हपेरी। 33 हेपेर के बेट
सलोफाद के बेटे नहीं, सिर्फ बेटियाँ हुयीं। इन बेटियों का नाम
महला, नोआ, होग्ला, मिल्का और तिसी है। 34 मनश्शे वाले
कुल ये ही थे; इन में से कुल मिलाकर बावन हज़ार सात सौ
आदमी थे । 35 एप्रैम पुत्र से निकलने वाले कुल शूतेहल, बेकेर
और तहन थे। इन के कुल भी चलते रहे। 36 शूतलेह का पुत्र
एरान था जिससे एरानी लोग हुए। 37 एप्रैमियों के कुल ये
ही थे : इन में से साढ़े बत्तीस हज़ार पुरूष हुए। ये ही यूसुफ़
के वंश के लोग थे। 38 बिन्यामीन के पुत्र से बेला, अशबेल,
अहीराम, शपूपाम, हूपाम थे 39 शपूपाम से शपूपामी, हुपाम
से हुपामी कुल हुए। 40 बेला के बेटे अर्द और नामान थे।
41 अपने कुलों के मुताबिक बिन्यामीनी ये ही थे; इन में से
जो गिने गए उनकी संख्या पैतालीस हज़ार छः सौ पुरूष थे।
42 दान का बेटा जिससे कुल निकला वह था शूहाम। शूहाम से
शूहामी बने। दान का कुल यही था। 43 जो आदमी शहूमियों
में से गिने गए वे चौसठ हज़ार चार सौ थे। 44 आशेर के बेटे
जिनसे अलग- अलग कुल निकले वे थे : यिम्ना, यिक्षी, बरीआ
45 बरीआ के बेटे थे : हेबेर, महकीएल । 46 आशेर की बेटी
सरेह थी । 47 आशेरियों में से तिरपन हज़ार चार सौ पुरूष थे
। 48 नप्ताली के पुत्र थे : यहसेल, गूनी येसेर, शिल्लेम। 49 येसेर
से येसेरी, शिल्लेम से शिल्लेमी बने । 50 इन के कुलो में से
पैतालीस हज़ार चार सौ पुरूष गिने गए । 51 अपने कुलों के
अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे : अर्थात् छैः लाख एक हज़ार
सात सौ तीस। 52,53 मूसा से याहवे ने कहा, " इतनी संख्या के
अनुसार वह ज़मीन इन्हें बाँट दी जाए। 54 जिस कुल में लोग
अधिक हैं इन्हें अधिक ज़मीन, जिस में कम हों, इन्हें कम देना।
55 चिट्ठी डालकर देश का बँटवारा हो। इस्त्राएलियों के पितरों,
के गोत्रों का नाम जैसे जैसे निकलता जाए, उन्हें अपना -
अपना हिस्सा मिलता जाए। 56 बँटवारा चिट्ठी डाल ही कर
किया जाए। 57 लेवियों में से जो गिने हुए वे हैं - गेशानियों का
कुल, कहातियों का कुल और मरारियों का कुल। 58 लेवियों के
कुल हैं - लिब्नी, हेब्रोनी, महली, मूशी और कोरही। कहात से
अम्राम पैदा हुआ था । 59 अम्राम की पत्नी थी, यौकेर्बद। वह
लेवी के वंश की थी और मिस्त्र में उसका जन्म हुआ था। उस
ने अम्राम से हारून, मूसा और मरियम को भी जन्म दिया।
60 हारून से नादाब, अबीहू एलीआज़ार और ईतामार पैदा
हुए । 61 याहवे के सामने ऊपरी आग ले जाने के समय नादाब
और अबीहू मर गए थे। 62 लेवियों में से उन आदमियों को गिने
जाने के बाद जो एक महीने या उस से अधिक के थे, वे तेईस
हज़ार निकले। उन्हें इसलिए नहीं गिना गया था क्योंकि देश
का कोई भी हिस्सा उन्हें नहीं दिया गया था । 63 मूसा और
एलीआज़ार पुरोहित जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो के
पास की यरदन नहीं के किनारे इस्त्राएलियों को गिन लिया,
उन के गिने इतने लोग ही थे। 64 लेकिन जिन इस्त्राएलियों की
मूसा और हारून पुरोहित ने सीनै के जंगल में गिनती की थी,
उन में से एक भी आदमी इस समय के गिने हुओं में से नहीं
था। 65 क्योंकि याहवे ने उन के बारे में कहा था, "वे ज़रूर ही
जंगल में मरेंगे ।" इसलिए यपुन्ने के बेटे कालेब और नून के बेटे
यहोशू के अलावा उन में से एक भी पुरूष नहीं बचा।

27 1 यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद
था। वह जेपेर का बेटा और गिलाद का पोता और
मनश्शे के बेटे माकीर का परपोता था। उसकी बेटियों के नाम
महूला, नेवा, होग्ला, मिल्का और तिसी थे। वे सभी एक साथ
आयीं। 2 मूसा, एलीआज़ार पुरोहित, प्रधानो और सब लोगों
की मौजूदगी में मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर खड़ी होकर
वे कहने लगी, 3“ हमारे पिताजी की मौत जंगल ही में हो गयी।
कोरह के साथ जिन लोगों ने परमेश्वर के खिलाफ़ बलवा
किया था, उन में वह नहीं थे। खुद के गुनाह के कारण वह
मर गए। जीवन भर उन के कोई बेटा उत्पन्न न हुआ। 4 हम
नहीं चाहते कि इस कारणवश उनका नाम मिट जाए इसलिए
हमारे चाचाओं के बीच हमें ही कुछ ज़मीन दी जाए।" 5 मूसा
ने उन के इस निवेदन को स्वीकार कर लिया 6,7 मूसा से याहवे
ने कहा," सलोफ़ाद की, बेटियों का कहना यही है। इसलिए
उन के चाचाओं के बीच उन्हें कुछ ज़मीन दे दो। 8 इस्राएलियों
से कहो, यदि कोई व्यक्ति बिना बेटे के मर जाता है, तो उसका
हिस्सा उसकी बेटी को देना। 9 यदि उसकी कोई बेटी न हो,
तो उसके भाईयों को उसका हिस्सा देना। 10 यदि उसके भाई
भी न हो, तो उसका भाग उसके चाचाओं को दे देना। 11 यदि
उसके चाचा भी न हों, तो उसके घराने में जो रिश्तेदार
नज़दीक का हो, उसको दे देना।" 12 फिर याहवे मूसा से बोले,
"अबारीम पहाड़ पर चढ़कर उस देश को देख लो, जिसे मैंने
इस्राएलियों को दिया है।" 13 तुम जब उसे देख चुकोगे,
तब अपने भाई हारून की तरह मर जाओगे, 14 क्योंकि सीन
नामक जंगल में तुम दोनों ने मेरी बात नहीं मानी जब सभी
लोग मुझ से झगड़ा कर रहे थे। तुम लोगों ने मुझे वहाँ सोते
के पास उनकी निगाह में पवित्र नहीं ठहराया।" (यह योता,
मरीबा है जो सीन जंगल के कादेश में है।) 15,16 मूसा ने याहवे
से कहा,"याहवे सभी लोगों की आत्माओं के परमेश्वर हैं। वह
स्वयं इन लोगों के ऊपर किसी पुरूष को रख दें, 17 वह व्यक्ति
उन के सामने आए-जाए। वही उनकी निकालने वाला और
बसाने वाला हो। इससे याहवे के लोग बिना चरवाहे की
भेड़-बकरियों की तरह न होंगे।" 18 मूसा से याहवे ने कहा,
"तुम नून के बेटे यहोशू को लो और उस पर हाथ रखो। उस
व्यक्ति में मेरा आत्मा है। 19 एलीआज़ार पुरोहित और पूरी
मण्डली के सामने उसे खड़ा कर आदेश दो। 20 तुम्हारे पास जो
सम्मान (महिमा) है उस में से कुछ यहोशू को भी दो, ताकि
सभी इस्राएली उसकी सुनें और मानें। 21 यहोशू एलीआज़ार
याजक (पुरोहित) के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआज़ार
उसके लिए याहवे से अरीम की आज्ञा पूछे। सभी उसकी
अनुमति ही से जाएँ और वापस आएँ। 22 इस आज्ञा से मूसा ने
यहोशू को लिया और एलीआज़ार तथा जनता के सामने खड़ा
किया। 23 उस ने यहोशू पर हाथ रखते हुए आज्ञा दी जैसा
याहवे ने मूसा के माध्यम से कहा था।

28 1,2 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "इस्राएलियों को
बताओ, मेरा चढ़ावा (खुशबू देने वाला हव्यरूपी
खाना, निश्चित समय पर चढ़ाने के लिए याद रखना। 3 उस ने
कहा, "याहवे को चढ़ाने के लिए हर रोज़ नित्य होमबलि के
लिए एक साल के दो निर्दोष भेड़ के नर बच्चे हर दिन चढ़ाना।
4 एक बच्चे को सुबह और दूसरे को सूरज ढलने पर चढ़ाना।
5 एक भेड़ के बच्चे के लिए एक चौथाई हीन कूट कर बनाए गए
तेल से सने हुए एपा के दसवे अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना।
6 यह हर दिन की होम बलि है, जिसे सीनै पहाड़ पर याहवे के
लिए तृप्त करने वाला खुशबूदार हव्य होने के लिए ठहराया
गया था। 7 उसका अर्थ प्रति एक भेड़ के बच्चे के साथ एक
चौथाई हीन हो। मदिरा के इस अर्घ को याहवे के लिए पवित्र
स्थान में देना। 8 दूसरे बच्चे को सूरज डूबने पर चढ़ाया जाए
। अन्नबलि और अर्घ सहित सुबह के होमबलि की तरह उसे
याहवे को सन्तुष्ट करने वाला खुशबूदार हवन करके चढ़ाना
। 9 "विश्राम दिन को दो निर्दोष भेड़ के एक साल के नर बच्चे
और अन्नबलि के लिए तेल से सना एपा का दो दसवाँ अंश
मैदा अर्घ के साथ चढ़ाना। 10 हर दिन होमबलि और उसके
अर्घ के अलावा हर दिन विश्राम दिन का होमबलि इसे ही
रखा गया है 11 "फिर अपने महीनों की शुरूआत में हर महीने
होम बलि देना अर्थात् दो बछड़े, एक मेंढ़ा और एक-एक साल
के निर्दोष भेड़ के सात पर बच्चे 12 एक बछड़े के लिए तेल से
सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा, उस के मेंढ़े के साथ तेल
से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा 13 हर एक भेड़ के
बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ भाग मैदा, उन
सब को अन्नबलि की तरह चढ़ाना। वह तृप्त करने वाली खुशबू
देने के लिए होमबलि और हवन होगा। 14 उस के साथ अर्घ ये
होने चाहिएः बछड़े पीछे आर्घ हीन, मेंढ़े के संग तिहाई हीन,
भेड़ के बच्चे पीछे चौथाई हीन दाखमधु दिया जाए। साल के
सभी महीनों में से हर एक माह का होमबलि यही हो। 15 एक
बकरा पापबलि की तरह कुर्बान किया जाए। यह हर दिन
होमबलि ओर उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए। 16 पहले
महीने के चौदहवें दिन को याहवे के लिए फ़सह मनाया जाए।
17 उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को त्यौहार मनाया जाए। सात
दिन तक केवल अखमीरी रोटी का सेवन हो। 18 पहले दिन
पवित्र सभा की जाए। उस दिन मेहनत का काम न किया जाए
। 19 उस में तुम याहवे के लिए एक हव्य यानि कि होमबलि
करना : इस में दो बछड़े, एक मेंढ़ा एक एक साल के सात भेड़
के नर बच्चे होः ये सभी निर्दोष हों। 20 उनका अन्नबलि तेल से

सने मैदे का हो। बछड़े पीछे एपा का तीन दसवाँ भाग और मेंढे़ के साथ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा हो 21 सातों भेड़ के बच्चों में से हर बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ भाग चढ़ाना। 22 एक बकरा पापबलि करके चढ़ाया जाए, जो कि प्रायश्चित्त के लिए है। 23 सुबह का होमबलि जो हर दिन होता है, उसके अलावा यह चढ़ाया जाए। 24 इस तरह तुम उन सातों दिनों में भी हव्य का खाना चढ़ाना, जो याहवे को सुखदायक सुगन्ध देने के लिए होगा। यह भी हर दिन होमबलि और उसके अर्घ के अतिरिक्त चढ़ाना। 25 सातवें दिन तुम पवित्र सभा करना। मेहनत का काम उस दिन कोई न करे। 26 पहली फ़सल के दिन में, जब तुम अपनी कटनी के त्यौहार में याहवे के लिए नया अन्नबलि चढ़ाओ, तब पवित्र सभा भी करना, और मेहनत के काम को न किया जाए। 27 होमबलि एक चढ़ाना, इस से याहवे तृप्त करने वाली खुशबू पहुँचेगी : अर्थात् दो बछड़े , एक मेंढ़ा और एक-एक साल के सात भेड़ के नर बच्चे। 28 अन्नबलि तेल से सने मैदे का हो, मतलब यह कि एक बछड़े के पीछे एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेंढे़ के साथ एपा का दो दसवाँ भाग। 29 सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ हिस्सा मैदा देना। 30 ये सभी जानवर बिना दोष के हों। हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा इसको भी चढ़ाना।

29 1 सातवें माह के पहले दिन तुम आत्मिक सभा करना, उस दिन मेहनत के काम से सब बचें। वह तुम्हारे लिए खुशी का और नरसिंगा फूँकने का दिन होगा। 2 होमबलि की सन्तोष देने वाली सुगन्ध याहवे के लिए हो : एक बछड़ा एक मेंढा और एक-एक साल के सात बिना खोट भेड़ के बच्चे 3 उनका अन्नबलि तेल से सने मैदे का हो ; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का दो दसवाँ हिस्सा 4 सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ भाग मैदा चढ़ाना 5 एक बकरा पापबलि के लिए चढ़ाया जाए। 6 सब से अधिक नए चाँद का होमबलि और अन्नबलि और प्रतिदिन होमबलि और उसका अन्नबलि और उन सभी के अर्थ भी जो उन के नियम के अनुसार सुख देने वाली खुशबू देने के लिए याहवे का हव्य करके चढ़ाना 7 सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी विशेष सभा की जाए। अपने आप को वश में करना, मेहनत मत करना। 8 याहवे के लिए दिल बहला देने वाली सुगन्ध का होमबलि : एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक एक साल के भेड़ के नर बच्चों को चढ़ाना। उन में किसी तरह की कमी न हो। 9 उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो। मतलब यह कि बछड़े के साथ एपा का दो दसवाँ भाग। 10 सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के लिए एपा का दसवाँ भाग मैदा चढ़ाना 11 पापबलि के लिए एक बकरा कुर्बान करना ये सभी प्रायश्चित्त के पापबलि और हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि के और उन सभों के अर्थों के अतिरिक्त चढ़ाए जाएँ। 12 "सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा की जाए। उस में कोई मेहनत न करे। सात दिन तक याहवे का त्यौहार मनाया जाए। 13 होमबलि याहवे को प्रसन्न करने के लिए हव्य करके देना : तेरह बछड़े, दो मेंढ़े और एक एक के चौदह भेड़ के नर बच्चे जिनमें कोई कमी न हों। 14 उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो, अर्थात् तेरह बछड़ों में से एक एक बछड़े के लिए एपा का तीन दसवाँ भाग और दोनों मेंढ़ों में से एक-एक मेंढ़े के पीछे एपा का दो दसवाँ भाग, 15 चौदह भेड़ के बच्चों में से एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ हिस्सा मैदा चढ़ाना 16 पापबलि के लिए एक बकरा चढ़ाना हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ को छोड़कर चढ़ाए जाएँ। 17 "दूसरे दिन बारह बछड़े और दो मेंढ़े और एक-एक साल के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। 18 बछड़ों, मेंढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ, उनकी संख्या के मुताबिक और नियम के मुताबिक चढ़ाए जाएँ 19 एक बकरा पापबलि के लिए चढ़ाया जाए। हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाने चाहिये। 20 फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेंढ़े, एक-एक साल के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। 21 बछड़ों, मेंढ़ों भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उनकी गिनती के अनुसार और विधि के अनुसार चढ़ाना 22 पापबलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाया जाए। प्रत्येक दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाने चाहिए 23 फिर चौथे दिन दस बछड़े, दो मेंढ़े, एक एक साल के चौहद निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। 24 बछड़ों, मेंढ़ो और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उनकी गिनती के अनुसार और निर्देष के आधार पर कुर्बान करना। 25 पापबलि के लिए एक बकरा चढ़ाना हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाएँ। 26 पाँचवे दिन नौ बछड़े, दो मेंढ़े और एक एक साल के चौदह बिना किसी दोष के भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। 27 बछड़ों, मेंढ़ो और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उनकी गिनती और नियम के मुताबिक करना। 28 पापबलि के लिए एक बकरा कुर्बान हो। हर रोज़ होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ। 29 छठवें दिन आठ बछड़े, दो मेंढ़े, एक साल के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे कुर्बान करना। 30 बछड़ों, मेंढ़ों, भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ उनकी गणना के अनुसार और तरीके से अर्पण करना। 31 पापबलि के लिए बकरा कुर्बान करना। हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि

और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ। 32 "फिर सातवें दिन सात
बछड़े, दो मेंढ़े, एक एक साल के चौदह बिना खोट के भेड़ के
नर बच्चे चढ़ाना। 33 और बछड़ों, मेंढ़ों और भेड़ के बच्चों के
साथ उन के अन्नबलि, अर्घ उनकी गिनती के अनुसार नियम
मानते हुए चढ़ाना । 34 पापबलि के लिए एक बकरा चढ़ाना
ये हर दिन होमबलि और अन्नबलि और अर्घ के अलावा हो
। 35 फिर आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा होगी । उस में
परिश्रम का काम कोई नहीं करेगा । 36 उस में होमबलि याहवे
को खुश करने के लिए किया जाए । वह एक बछड़े, एक मेंढ़े,
एक-एक साल के सात गिद्द, भेड़ के नर बच्चों का हो, 37 बछड़े,
मेंढे़ और भेड़ के बच्चों के साथ उन के अन्नबलि और अर्घ
उनकी गिनती के अनुसार और विधि के हिसाब से चढ़ाना ।
38 पापबलि के लिए बकरा भी कुर्बान करना हर दिन होमबलि
-अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ । 39 लोग अपनी
मन्नतों और मन से लायी गयी बलियों के साथ साथ निश्चित
समयों पर होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि याहवे के लिए
लाएँ । 40 यह सब आदेश याहवे ने मूसा को दी और उस ने
इस्राएलियों को सुना दी ।

30 1 मूसा ने इस्राएल के सभी कबीलों के प्रधानों को
बुलाकर कहा,"परमेश्वर का आदेश यह है, 2 "यदि
एक आदमी कुछ प्रण करता है, तो उसे अपने वचन को पूरा
करना चाहिए।" 3 इसी तरह यदि एक जवान महिला जो अपने
पिता के घर में रह रही है कुछ प्रतिज्ञा करती है, तो उसे भी
अपनी कही हुयी बात को पूरा करना चाहिए। 4 उसके पिता
के कामों में उसके शब्द पड़ने के बाद भी यदि पिता कुछ भी
नहीं कहता है, तो उस महिला को अपने कहे शब्दो के अनुसार
करना ही चाहिए। 5 लेकिन उसकी ही मन्नत को यदि पिता
स्वीकार नहीं करता, तो वह महिला कसूरवार नहीं ठहरेगी।
पिता की बात मानने की वजह से याहवे भी उसे माफ़ी दे देंगे।
6 यदि विवाह के बाद महिला कोई प्रतिज्ञा करती है, 7 और
पति उसे सुन लेता है, लेकिन कुछ कहता नहीं है, तो ठीक है।
8 लेकिन उतावली से की गयी प्रति ा को यदि उसका पति
सुन कर रद्द कर देता है, तो महिला को परमेश्वर से माफ़ी
मिलेगी। 9 लेकिन विधवा और तलाकशुदा महिला जो भी
वचन दे देती है, उसे पूरा करना चाहिए। 10 यदि उस महिला
ने अपने पति के घर में रहते हुए कुछ प्रण किया है। 11 और
उसके पति के कान तक बात नहीं पहुँची है और उसके पति को
कोई शिकायत नहीं है, तो कोई बात नहीं, वह अपना वचन
पूरा कर सकती है। 12 किन्तु यदि उसका पति जिस दिन उसे
सुनता है और उसे रद्द कर देता है, तो वह रद्द ही रहे और
परमेश्वर उसे क्षमा करेंगे। 13 उसका पति उसके वचन में हाँ
में हाँ मिला सकता है या उसे रद्द कर सकत है। 14 लेकिन
यदि उसका पति कोई टीका-टिप्पणी नहीं करता, तो इस का
मतलब होगा कि वह अपनी पत्नी से सहमत है। 15 लेकिन यदि
समय बीतने के बाद वह रद्द करता है तो उसकी सज़ा उसे ही
मिलेगी। 16 ये ही वे निर्देष हैं जो पति -पत्नी और पिता के घर
पर रहने वाली कुंवारी बेटी के बारे में हैं।

31 1,2 मूसा से याहवे ने कहा, " मिद्यानियों से
इस्राएलियों का बदला लो। 3 तब मूसा ने
इस्राएलियों से कहा, "पुरूषों को युध्द के लिए तैयार करो,
ताकि वे मिद्यानियों से युध्द करें। 4 सभी गोत्रों में से एक-एक
हज़ार, पुरूषों को चुनो। 5 तब ऐसा किया गया और हथियारों
से लैस बारह हज़ार सैनिक तैयार हो गए। 6 हर एक गोत्र में
से उन हज़ार हज़ार आदमियों को और एलीआज़ार पुरोहित
के बेटे पीनहास को युध्द के लिए भेजा गया। उसके हाथ में
पवित्रस्थान के बर्तन और तुरहियाँ थी जो फूँकी जाती थीं।
7 याहवे की आज्ञा से सैनिकों ने काफी़ लोगों को हताहत
किया। 8 उन्हों ने एबी, रेकेम, सूर, हूर और रेबा नाम के
पाँच मिद्यानी राजाओं को भी मार डाला। उन्हों ने बोर के
बेटे बिलाम को भी तलवार से मार डाला। 9 इस्राएलियों
ने मिद्यानी महिलाओं को बालबच्चों सहित हिरासत में ले
लिया। उन के गाय-बेल, भेड़ बकरी और दौलत को ज़ब्त
कर लिया। 10 उनकी रहने की बस्तियों और छावनियों को
भी उन्हों ने फूँक डाला। 11 तब इन्सान, जानवर, बन्दियो
और ज़ब्त किए सामान को लेकर 12 यरीहो के पास यरदन
नदी के किनारे मोआब के अराबा में छावनी के पास मूसा
और एलीआज़ार पुरोहित और सभी छावनी इस्राएलियों के
पास आए। 13 इस के पश्चात मूसा, एलीआज़ार और मण्डली
के मुख्य लोग छावनी के बाहर उनका स्वागत करने आए।
14 मूसा सहस्रपति-शतपति आदि सेनापतियों से जो लड़ाई
करके आए थे, गुस्से में कहने लगा, 15 क्या सब महिलाओं को
तुम ने ज़िन्दा छोड़ दिया ? 16 देखो, बिलाम की सलाह से,
पोर के बारे में इस्राएलियों से याहवे का विश्वासघात इन्हीं
महिलाओं ने कराया था। इसी लिए फिर वहाँ मरी फै़ली
थी। 17 इसलिए अब बालबच्चों में से प्रत्येक लड़के को और
जितनी महिलाओं ने आदमियों का मुँह देखा हो, उन सभी को
मार डालो। 18 जिन लड़कियों ने आदमियों का मुँह नहीं देखा
है, उन सभी को तुम अपने लिए ज़िन्दा रखना। 19 सात दिन
तक तुम बाहर रहना और तुम में से जितने लोगों ने किसी
को घात किया और जितनों ने किसी मरे हुए को छुआ हो,
वे सभी अपने-अपने बन्दियों सहित तीसरे और सातवें दिनों
में अपने अपने गुनाह छुड़ाकर पवित्र करें। 20 सभी कपड़ों,

चमड़े की बनी चीजों, बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी सभी चीजों को शुध्द कर लो ।" 21 तब एलीआज़र ने फौ़ज के उन आदमियों से जो युध्द में गए थे कहा, "जो आदेश दिया गया था वह यह है : 22 सोना चांदी, पीतल, लोहा, टिन और सीसा 23 आग में जो डालने पर ठहरे, उसे डालो वह साफ़ हो जाएगा। वह गंदगी को साफ़ करने वाले पानी से युध्द किया जाए। लेकिन जो कुछ आग में न ठहरे उसे पानी में डुबाओ। 24 सातवें दिन अपने कपड़ो को धोकर शुध्द होकर छावनी में आना। 25,26 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "एलीआज़र और मण्डली के पितरों के परिवारों के मुख्य आदमियों को संग लेकर लूटे हुए मनुष्यों और जानवरों की गिनती कर लेना 27 तब जो सैनिक युध्द करने गए थे, उन्हें आधा-आधा करके एक हिस्सा और दूसरा हिस्सा लोगों को दे। 28 फिर जो सैनिक युध्द में लड़ने गए थे, उन के आधे में से याहवे के लिए, चाहे इन्सान हो या जानवर 29 पाँच सौ के पीछे एक को टॅक्स मानकर ले ले। इसे याहवे को भेंट चढ़ाकर याजक को दे दे। 30 इस्राएलियों के आधे में से क्या इन्सान क्या जानवर, पचास पीछे एक लेकर याहवे के निवास की रखवाली करने वाले लेवियों को दे। 31 ऐसा किया भी गया 32 जो चीजें फौ़ज के पुरूषों ने अपने लिए लूट ली थीं, उन से ज़्यादा की लूट यह थीः छ लाख पचहत्तर हज़ार भेड़ बकरियाँ, 33 बहत्तर हज़ार गाय-बैल, 34 इकसठ हज़ार गधे 35 ऐसे पुरूष जिन्होंने महिलाओं का मुँह तक नहीं देखा था उनकी संख्या बत्तीस हज़ार थी। 36 जो लड़ाई पर गए थे 37 पौने सात सौ भेड़ बकरियाँ याहवे का टॅक्स ठहरी। 38 गाय बैल छत्तीस हज़ार, जिनमें से बहत्तर याहवे का टॅक्स। 39 साढ़े तीस हज़ार गदहों में से इकसठ टॅक्स 40 सोहल हज़ार मनुष्य, जिस में से बत्तीस प्राणी कर ठहरे 41 यह कर याहवे के लिए दान था। इसे मूसा ने एलीआज़ार को दिया 42 इस्राएलियों का आधा 43 तीन लाख साढ़े सैंतीस हज़ार भेड़ बकरियाँ, 44 छत्तीस हज़ार गाय-बैल 45 साढ़े तीस ज़ार गदहे 46 सोलह हज़ार मनुष्य 47 इस आधे में से जिसे मूसा ने युध्द करने वाले आदमियों के पास से अलग किया था, याहवे के आदेश के मुताबिक मूसा ने मनुष्य और जानवर, पचास पीछे एक लेकर रखवाली करने वाले लेवियों को दिया। 48 सेना में हज़ारों के ऊपर जिन्हे नियुक्त किया गया था, मूसा से कहने लगे 49 जो सिपाही हमारे आधीन थे उनकी गिनती की गयी है और कोई कम नहीं है। 50 इसलिए पायजेब, कड़े, मुंदरिया, बालिया, बाजूबन्द, सोने के गहने जिनको मिले हैं, उन्हें हम याहवे के सामने अपने प्राणों के लिए प्रायश्चित करने को भेंट दें। 51 तब मूसा और एलीआज़ार ने उन से वे आभूषण ले लिए, 52 सहस्त्रपति और शतपति जो भेंट को सोना, याहवे को दे चुके थे वह सब सोलह हज़ार साढे़ सात सो शेकेल था। 53 योध्दाओं ने अपने अपने लिए लूट ले ली थी। 54 यह सोना मूसा और एलीआज़ार याजक (पुरोहित) ने सहस्त्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलाप वाले तम्बू में पहुँचा दिया। यह इसलिए कि इस्राएलियों के लिए याहवे के सामने याद दिलाने वाली चीज़ ठहरे।

32 1 रुबेनियों और गादियों के पास बहुत से जानवर थे। उन्हों ने यह पाया कि याजेर और गिलाद देश अच्छा चरागाह होने की वजह से उपयोगी है 2 तब मूसा और एलीआज़ार ने प्रधानों के पास आकर कहा, 3 "अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेराबोन, एलाले, सबाम, नबो और बोन नगर हमारे पशुओं के लिए बिल्कुल सही जगह है। 4 इन पर हमारा ही राज्य है 5 वे बोले, "यदि तुम कहो तो ये देश हमारी अपनी ज़मीन हो जाए और हमें यरदन पार आना न पड़े। 6 मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा, "जब तुम्हारे भाई लड़ाई परी जाएँगे, तब क्या तुम यहाँ हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहोगे ? 7 अब तुम इस्राएलियों के मन को कमज़ोर क्यों कर रहे हो कि वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में दाखिल हों। 8 मैंने तुम्हारे पूर्वजों को जब कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिए भेजा था, तब उन्हों ने भी ऐसा ही किया था। 9 एशकोल घाटी तक पहुँचकर देश को देखने पर उन्हों ने भी इन्कार कर दिया था। 10 इसलिए गुस्से में आकर याहवे ने प्रण कर लिया। 11 "इस में कोई सन्देह नहीं कि जो लोग मिस्त्र की गुलामी से निकल आए है और बीस या उस में अधिक उम्र के हैं, वे उस देश को न देख सकेंगे। हालाँकि इस भूमि को देने का वायदा मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से किया था। लेकिन ये मिस्त्र से निकले लोग पूरे मन से मेरी इच्छा को पूरा न कर सके। 12 यपुन्ने कनजी का बेटा कालेब और नून का बेटा यदोष पूरी तरह से मेरे प्रति आज्ञाकारी रहे हे, ये इस नए देश को देख सकेंगे. 13 इसलिए याहवे का क्रोध इस्राएलियों पर भड़क गया और जब तक उस पीढ़ी के लोग खतम न हो गए, जिन्होंने याहवे के लिए बुरा किया था, तब तक यानि कि चालीस साल तक वे लोग जंगल में मारे-मारे फिरते रहे। 14 हाँ सुना, तुम लोग उन गुनाहगारों की सन्तान होकर इसीलिए अपने पूर्वजों की जगह पर प्रकट हुए हो, कि इस्त्राएल के खिलाफ़ याहवे के भड़के हुए गुस्से को और भी भड़काओ। 15 यदि तुम भी उनकी इच्छा पर न चले तो वह हम सभी को जंगल में छोड़ देंगे, इस तरह से तुम सभी बर्बाद हो जाओगे। 16 तब वे मूसा से बोले," अपने जानवरों के लिए हम बसेरा बनाने के साथ अपने बालबच्चों के लिए नगर बसाएँगे। 17 लेकिन खुद इस्राएलियों के आगे-आगे हथियार बन्द तब तक चतते जाएँगे जब तक उनको उन के स्थान में न पहुँचा दे, लेकिन हमारे बाल-बच्चे

इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों में रहेंगे।
18 लेकिन जब तक इस्राएली अपने अपने हिस्सों के अधिकारी
न हो जाएँ तब तक हम अपने घरों को वापस न जाएँगे। 19 उन
के साथ हम यरदन पार या कहीं आगे अपना हिस्सा न लेंगे,
क्योंकि हमारा हिस्सा यरदन के इस पार पूर्व की तरफ़ मिला
है।" 20 तब मूसा उन से बोला, "यदि तुम ऐसा करो मतलब
यह कि यदि तुम याहवे के आगे -अगे लड़ाई करने के हथियारों
से लैस हो, 21 और हर एक हथियारों से लैस यरदन के पार
तब तक चले, जब तक याहवे अपने आगे से अपने दुश्मनों
को न निकाले. 22 और देश याहवे के अधिकार में न जाए, तो
उसके पीछे तुम यहाँ लौटोगे, और याहवे के और इस्राएल के
बारे में निरपराध ठहरोगे। 23 यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो
याहवे के खिलाफ़ गुनाहगार ठहरोगे और इसका भुगतान तुम्हें
ही करना पड़ेगा। 24 अपने परिवारों के लिए नगर बसाओ।
अपने भेड़ों का निर्माण करो। जैसा तुम ने कहा है वैसा करना
भी 25 तब गादी और रूबेनी बोले, "हम ज़रूर ऐसा करेंगे।"
26 हमारे परिवार और मवेशी यही गिलाद के नगरों में रहेंगे।
27 लेकिन अपने प्रभु के कहने के अनुसार आपके दास सब के
सब युध्द के लिए हथियार बन्द याहवे के आगे लड़ने को पार
जाएँगे। 28 तब मूसा ने एलीआज़ार यहोशू और इस्राएली
गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य आदमियों को यह
आदेश दिया, 29 कि यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युध्द के
लिए हथियारों से लैस तुम्हारे साथ यरदन पार जाएँ और
देश तुम्हारे अधिकार में आ जाए तो गिलाद उनकी अपनी
भूमि होने के लिए उन्हें दे देना। 30 लेकिन यदि वे तुम्हारे
साथ हथियारों से लैस पार न जाएँ तो उनकी अपनी भूमि
तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरो।" 31 तब गादी और रूबेनी
बोले, जैसा याहवे ने तुम्हारे दासों से कहलाया है, वैसा ही हम
करेंगे। 32 हम हथियारों से लैस होकर याहवे के आगे आगे उस
पर कनान देश में जाएँगे, लेकिन हमारी अपनी ज़मीन यरदन
के इसी पार हो। 33 तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को और
यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के आधे गोत्रियों को ऍमोरियों के राजा
सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश,
नगरों और उन के आसपास की ज़मीन सहित दे दिया। 34 तब
गादियों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर 35 अत्रौत, शोपान,
याजेर, योगबहा, 36 बेतनिम्रा और बेथारान नामक नगरों को
मजबूत किया। वहाँ जानवरों के लिए शरण स्थान भी बनाया।
37 रूबेनियों ने हेशबाने, एलाले, और किर्यातैम को, 38 फिर
नबो और बलमोन के नाम बदल कर उनको और सिमबा को
मज़बूत किया। उन्हों ने अपने मज़बूत बनाए नगरों के दूसरे
और नाम भी रखे। 39 मनश्शे के बेटे माकीर के वंशवालों ने
गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया जो उमरी उस में रहा
करते थे, उनको निकाल भी दिया। 40 तब मूसा ने मनश्शे के
बेटे माकीर के वंश को गिलाद दे दिया, और वे उस में रहने
लगे। 41 मनश्शेयेई याईर ने जाकर गिलाद की तमाम बस्तियाँ
ले ली। उन के नाम हव्वात्याईर रखे। 42 वह नोबह गया और
वहाँ के गाँवों सहित कनात को ले लिया। उसका नाम उस ने
नोबह रखा।

33 1 जब से इस्राएली मूसा और हारून के मार्गदर्शन
में दल बनाकर मिस्र की गुलामी से निकले, तब
से ये पड़ाव उन्हों ने डाले। 2 याहवे से निर्देष पाकर मूसा ने
उन के रवाना होने और पड़ावों को डालने के मुताबिक लिख
डाला। 3 पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को वे रामसेस से चल
पड़े। फ़सह के दूसरे दिन इस्राएली लोग मिस्रियों के सामने
ही निडरता से निकल गए थे। 4 उस समय जब याहवे व्दारा
मारे गए मि पहलोंठो को, मिस्त्रियों लोग दफ़ना रहे थे, तथी
उन के देवताओं को भी याहवे ने सज़ा दी थी। 5 इस्राएली
रामसेस से निकले और सुक्कोत में डेरे डाले। 6 सुक्कोत से
निकलकर एताम में, जो जंगल के छोर पर है, तम्बू लगाए।
7 एताम से निकल कर वे पीहहीरोत की तरफ़ मुड़ गए, जो
बालसपोन के सामने है। वही मिगदोल के सामने उन्हों ने
तम्बू लगाए। 8 तब वे पीहहीरोत के सामने से निकले और
समुन्दर से होते हुए जंगल में गए। उन्हों ने एतात नामक
जंगल का रास्ता तय करते हुए मारा पहुँचे। 9 मारा से निकल
कर वे एलीम पहुँचे। एलीम में पानी के बारह सोते और
खजूर के सत्तर पेड़ थे। वही उन्हों ने अपने तम्बू गाड़ दिए।
10 एलीम से निकलकर वे लाल समुद्र के किनारे आए और वही
डेरे डाले। 11 लाल समुद्र से रवाना होने के बाद सीन नाम
जंगल में तम्बू खड़े किए। 12 सीन से निकलने के बाद उनका
ठिकाना था दोपका। 13 दोपका से निकलने के बाद आलूश में
डेरा डाला। 14 आलूश से विदा हुए तो अगला पड़ाव खीदीम
में था, जहाँ पानी नहीं था। 15 खीदीम से निकलने के बाद
सीनै के जंगल में डेरे डाले। 16 सीनै के जंगल से निकलकर
किब्रोथत्तवा में डेरा किया। 17 किब्रोथत्तवा से निकलकर
हसेरोत में पड़ाव डाला। 18 हेसरोत से कूच करने के बाद
रित्मा में डेरे डाले। 19 रित्मा से निकले तो रिम्मोनपेरेरा में डेरे
खड़े किए। 20 रिम्मोनपेरेस से निकलकर लिब्ना में डेरे डाले।
21 लिब्ना से निकलकर रिस्सा में डोरे खड़े किए। 22 रिस्सा
से कूच किया तो कहलाता में डेरे खड़े किए। 23 कहेलाता से
रवाना हुए तो शेपेरे पहाड़ के पास ठहरे। 24 शेपेर से जाने के
बाद हरादा में रूके। 25 हरादा के बाद मखेलोत। 26 मखेलोत
के बाद तहत। 27 तहत के पश्चात तेरह। 28 तेरह से निकले
तो मित्का पहुँचे। 29 मित्का से गए तो हेशमोना में डेरे खड़े

किए। 30 हशमोना से निकलने के बाद मोसेरोत । 31 मोसेरोत
से कूच करके यकानियों के मध्य रहे। 32 यकानियों से निकले
तो होर्हग्गिदगाद पहुँचे। 33 होर्हग्गिदगाद से निकलने के बाद
योतबात में रूके। 34 योतबाता से कूच किए तो अब्रोना में
आ रूके। 35 अब्राना से निकलने के पश्चात एस्योनगेबेर में ।
36 एस्योनगेबेर के बाद कार्दश । 37 कादेश के बाद होर पहाड़
के नज़दीक 38 तब तक मिस्र की गुलामी से छेटू इस्राएलियों
चालीस साल हो गए। वही पाँचवे महीने के पहले दिन को
याहवे से आदेश पाकर हारून पहाड़ पर चढ़ा और वहीं मर
भी गया, 39 उसकी उम्र उस समय एक सौ तेईस साल थी।
40 कनान के दक्षिण भाग में उस समय अरात का कनानी राजा
रहा करता था। इस्राएलियों के वहाँ पहुँचने का समाचार उसे
मिला। 41 एस्राएली होर पहाड़ से निकलकर सलमोना आए।
42 सलमोना से निकले तो पूर्नान में तम्बू खड़े किए। 43 पूनोन
से गए तो ओबोस में रूके। 44 ओबोस के बाद अबारीम डोहो
में जो मोआब की सरहद पर है, डेरे डाल दिए। 45 जहाँ से
निकलकर उन्हों ने दीबोनगाद में पैर रखे। 46 दीबोनगाद के
बाद अल्मोनदिबलातैस 47 अल्मोनदिबलातैम से निकलकर
उन्हों ने अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने पड़ाव
किया। 48 अबारीम पहाड़ों से निकलकर मोआब के अराबा
में, यरीहो के पास यर्दन नदी के किनारे वे रहे। 49 उन्हों ने
मोआब के अराबा में वेत्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक
यर्दन के किनारे पड़ाव किया। 50 फिर मोआब के अराबा में
यरीहो के पास की यर्दन नदी के किनारे, याहवे ने मूसा से
कहा, 51 "इस्राएलियों को बताओ कि जब तुम यर्दन नदी पार
कर के कनान देश पहुँचो, 52 तब उस के रहने वालों को उन
के देश से निकाल देना । उन के नक्काशीदार पत्थरों को और
ढली मूर्तियों को बर्बाद कर डालना। उनकी पूजा की जगहों
को ढा देना 53 उस देश को अपने वश में कर के वहीं रहना।
तुम को वह देश मैंने दिया है। 54 चिट्ठी डालकर अपने कुलों के
अनुसार उसे बाँट लेना। जो कुल वाले ज़्यादा हैं उन्हें ज़्यादा
ज़मीन और जो थोड़े वाले हैं, उन्हें कम। 55 लेकिन यदि तुम
वहाँ के रहने वालों को खदेड़ोगे नहीं तो वे तुम्हारी आँखों में
काँटे और पांजरों में कीलों की तरह होंगे। वे तुम्हें परेशानी में
डाल देंगे। 56 और जैसा बर्ताव उन से करने का मैंने निश्चित
किया है, तुम ही से करूँगा।

34 1,2 मूसा से याहवे बोले,"यह आदेश इस्राएलियों को
दोः जो देश तुम्हारा होने जा रहा है, वह चारों ओर
की सीमा तक का कनान देश है। 3 इसलिए कनान पहुँचने पर
दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से लेकर एदोम देश के किनारे
होता हुआ चला जाए। और तुम्हारी दक्षिणी सरहद खारे ताल
के सिरे पर शुरू होकर पश्चिम की ओर चले । 4 वहाँ से तुम्हारी
सीमा अक्रब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़े
और सीन तक आए फिर कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले
और हरारद्दार तक बढ़ कर अस्मोन तक पहुँचे। 5 फिर वह
सरहद अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले तक पहुँचे और उसका
अन्त समुद्र की तह हो। 6 "फिर पश्चिमी सीमा महासमुद्र ही"
यही तुम्हारी पश्चिमी सीमा ठहरे। 7 यही तुम्हारी उत्तरी सीमा
हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से लेकर होर पहाड़ तक सीमा
बान्धना। 8 होर पहाड़ से हमात की घाटी तक सीमा रखना।
वह सदाद तक हो। 9 वह जिप्रोन तक पहुँचकर हसरेनान पर
निकले। उत्तरी सीमा तुम्हारी यही होगी। 10 फिर अपनी
पूर्वी सीमा हसरेनान से शपाम तक रखना। 11 वह शिपाम से
रिबला और नीचे उतरते उतरते किन्नेरेत नामक तलाब के
पूर्व से लगा रहा। 12 वह सीमा यर्दन नदी तक उतरकर खारे
तलाब के किनारे निकले। तुम्हारे देश की चारों सीमाएँ यही
होंगी। 13 तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा, तुम जिस देश के
हकदार चिट्ठी डालने से होगे, उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को
देना होगा। 14 लेकिन रूबेनियों और गादियों के गोत्र अपने
अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना-अपना हिस्सा ले चुके
हैं। मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को भी उनका भाग मिल
चुका है। 15 उन ढाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास यरदन के
पार पूरब की ओर अपना-अपना हिस्सा पा चुके हैं। 16,17 मूसा
से याहवे बोले,"जो लोग तुम लोगों के लिए बाँटने का काम
करेंगे, उन के नाम हैं, एलीआजार याजक (पुरोहित) और नून
का बेटा यहोशू। 18 देश का बँटवारा करने के लिए एक-एक
गोत्र का एक प्रधान हो। 19 इन पुरूषों के नाम ये हैं : यहूदा
के गोत्र का यपुन्ने का बेटा काबेल, 20 शिमोन के गोत्र का
अम्मीहूद का बेटा शमूएल। 21 बिन्यामी के गोत्र का किसलोन
का बेटा एलीदाद 22 दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का
बेटा बुक्की 23 यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान
एपोद का बेटा हन्नीएल 24 एप्रेमियों के गोत्र का प्रधान शिम्शान
का बेटा कमूएल, 25 जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का
बेटा एलीसापान 26 इस्साकरियों के गोत्र का प्रधान अज्जान
का बेटा पलतीएल, 27 आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी
का बेटा अहीहूद, 28 नप्तालियों के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद
का बेटा पदहेल। जिन पुरूषों को याहवे कनान देश को
इस्राएलियों के लिए बाँटने का हुकुम दिया वे ये ही हैं।